सारा संसार एक परिवार

कहानी संग्रह

मुहम्मद अली शाह शुऐब

khusro foundation

KHUSRO FOUNDATION
www.khusrofoundation.org

Sara Sansar Ek Pariwar

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम किताब	:	सारा संसार एक परिवार
लेखक	:	मुहम्मद अली शाह शुऐब
ISBN	:	**978-81-985023-2-2**
पेशकश	:	ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन
संस्करण	:	जनवरी 2025
कुल संख्या	:	1000
पृष्ठ	:	80
मूल्य	:	160/-

Printed by

Creative Star Publications

Okhla, New Delhi

Email: creativestar1122@gmail.com

Call: 8851148278, 9958380431

विषय सूचि

भूमिका	3
प्रस्तावना	7
सारा संसार एक परिवार	11
मज़हब की अफ़ीम	18
एकता चौक	30
मज़हब सिखाता है आपस में मेल रखना	38
रंगों का जादू	45
समझदारी की जीत	52
चालाक सियार और जंगल का राज	58
झन्डा ऊँचा रहे हमारा	62
सच्चा नागरिक	68
चुनावी चर्चा	72
ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन: एक नई पहल	79

भूमिका

बचपन एक ऐसा दौर होता है जब किसी भी इंसान का दिल और दिमाग़ कच्ची मिट्टी की तरह होता है, जिसे जैसा आकार दिया जाए, वैसा ही बन जाता है। इसी उम्र में बच्चों के भीतर संस्कार, नैतिक मूल्य और सोचने-समझने की क्षमता विकसित होती है। आज के दौर में, जबकि समाज में हिंसा, वैचारिक मतभेद और धार्मिक व लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याएँ तेज़ी से बढ़ रही हैं, यह और भी ज़रूरी हो जाता है कि बच्चों के दिलों में प्यार, भाईचारे और इंसानियत के बीज बोए जाएँ।

यही उद्देश्य लेकर किताब "सारा संसार एक परिवार" लिखी गई है।

इस किताब की कहानियाँ सिर्फ़ मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि बच्चों के दिल और दिमाग़ को झकझोरने और उन्हें सोचने की दिशा देने का एक प्रयास भी हैं। इन कहानियों में ऐसे पात्र और घटनाएँ पेश की गई हैं, जो बच्चों को न सिर्फ़ अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास कराएँगी, बल्कि उन्हें यह भी सिखाएँगी कि समाज में हर धर्म, हर जाति और हर लिंग के लोग बराबर हैं। किसी के साथ नफ़रत या भेदभाव करना इंसानियत के ख़िलाफ़ है। इस किताब के ज़रिये बच्चों को यह सन्देश दिया गया है कि हिंसा किसी समस्या का हल नहीं होती, बल्कि बातचीत, भाईचारे और प्रेम से ही हर समस्या का हल निकाला जा सकता है। "सारा संसार एक परिवार" का विचार हमें उस मूल सिद्धान्त की याद दिलाता है, जो हमारी संस्कृति "वसुधैव कुटुंबकम्" का आधार है —और इस्लाम से भी इसकी शिक्षाएँ मिलती हैं "अल-ख़ल्क़ु अयालुल्लाह।" दोनों का सार यही है कि सारी धरती ईश्वर का कुटुम्ब है।

सबसे अच्छा इन्सान वही है जो इस कुटुम्ब को बेहतर बनाने और शान्ति की स्थापना में अपनी ज़िम्मेदारी निभाए। जब बच्चे यह समझ जाएँगे कि पूरी दुनिया एक परिवार की तरह है, तो उनके दिलों में दूसरों के लिये हमदर्दी, इज़्ज़त और भाईचारे की भावना पैदा होगी। यह भावना उन्हें ऐसे नागरिक के रूप में ढालने में मदद करेगी, जो न सिर्फ़ अपने परिवार और समुदाय बल्कि पूरे देश और दुनिया के लिये उपयोगी साबित होंगे। इस किताब की कहानियों में बच्चों की मासूमियत, जिज्ञासा और अन्दर छिपी अच्छाई को उभारने की कोशिश की गई है। कहानियों के पात्र और घटनाएँ बच्चों की ज़िन्दगी से जुड़ी हैं, ताकि वे इनसे आसानी से जुड़ सकें और कुछ सीख सकें। साथ ही, कहानियों में कहीं-कहीं हास्य का पुट भी है, ताकि बच्चे पढ़ते-पढ़ते मुस्कुरा सकें और कहानी का आनन्द ले सकें।

आज का दौर ऐसी किताबों की माँग करता है जो बच्चों को सिर्फ़ ज्ञान न दें, बल्कि उन्हें सोचने और अपने विचार विकसित करने का मौक़ा भी दें। "सारा संसार एक परिवार" उसी दिशा में एक छोटा-सा प्रयास है। इसमें ऐसी कहानियाँ शामिल की गई हैं, जो बच्चों के ज़ेहन में इस बात की जड़ें मज़बूत करेंगी कि एकता में शक्ति है और नफ़रत से सिर्फ़ कमज़ोरी आती है। इन कहानियों के ज़रिए यह सिखाने की कोशिश की गई है कि किसी के धर्म, रंग, जाति या लिंग से कोई इंसान छोटा या बड़ा नहीं होता। जो इंसानियत के रास्ते पर चलता है और अपने प्रभु की अवज्ञा से बचते हुए ज़िन्दगी गुज़ारता है, वही सबसे बड़ा होता है।

यह पुस्तक लिखने का विचार मुझे तब आया जब मैंने बच्चों के बीच बढ़ते हिंसा और भेदभाव के रवैये को महसूस किया। मैंने सोचा कि क्यों न एक ऐसी किताब लिखी जाए, जो बच्चों को इंसानियत, भाईचारे और प्रेम का महत्व समझा सके। इस पुस्तक की हर कहानी को इस उद्देश्य से लिखा गया है कि बच्चे इसे पढ़कर समाज में एकता और समानता की भावना को समझ सकें। मेरी इस सोच को बल तब मिला जब मेरी मुलाक़ात ख़ुसरौ फ़ाउंडेशन के कन्विनर जनाब हफ़ीज़ुर्रहमान साहब से हुई। इन्होंने न केवल मेरा हौसला बढ़ाया बल्कि फ़ाउंडेशन से मेरी किताबों को बड़े पैमाने पर छापकर बच्चों तक पहुँचाने का वादा किया।

आशा है कि "सारा संसार एक परिवार" के ज़रिये बच्चों को जीवन के महत्वपूर्ण सबक़ मिलेंगे और वे बड़े होकर ऐसे नागरिक बनेंगे जो देश को ख़ुशहाल बनाएँगे और समाज में एकता और समरसता बनाए रखेंगे। मेरा विश्वास है कि यह किताब बच्चों के दिलों को छुएगी और उनकी सोच को एक नई दिशा देगी। मेरी आप सबसे यही गुज़ारिश है कि इन कहानियों को सिर्फ़ बच्चों तक सीमित न रखें, बल्कि घर के बड़े-बुज़ुर्ग भी इन्हें पढ़ें, ताकि परिवार और समाज दोनों का माहौल बेहतर हो सके। इन्हीं शब्दों के साथ, मैं इस किताब को आपके हाथों में सौंपता हूँ, इस उम्मीद के साथ कि ये कहानियाँ बच्चों के दिलों में प्यार, भाईचारा और इंसानियत का अलख जगाएँगी और हमारा समाज एक बेहतर भविष्य की ओर बढ़ेगा।

मुहम्मद अली शाह शुऐब

प्रस्तावना

ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन की यह ताज़ा पेशकश पेश करते हुए हम फ़ख़्र महसूस कर रहे हैं। ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन अब तक विभिन्न विषयों पर हिन्दी, उर्दू और अंग्रेज़ी ज़बानों में 20 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित करके देश भर के विभिन्न पुस्तकालयों, विश्वविद्यालयों, कॉलेजों, स्कूलों और मदरसों में भेज चुका है, मगर यह किताब हमारे लिये ख़ास है क्योंकि यह बच्चों की कहानियों पर आधारित हमारी पहली पुस्तक है।

इस किताब को लिखवाने और छापने का मक़सद यह है कि हम स्कूल/मदरसा जाने वाले बच्चों के दिल व दिमाग़ में अपने देश और समाज से सच्ची मुहब्बत और तमाम इन्सानों के लिये इज़्ज़त व सम्मान का जज़्बा पैदा करें और आपको समाज-सेवा और देश-निर्माण में कंट्रीब्यूट करने के साथ-साथ एक अच्छा नागरिक बनने के लिये मोटीवेट कर सकें ताकि आप जहाँ भी जाएँ, आपसी भाईचारे, मोहब्बत और एकता की मिसाल बनें।

याद रहे कि अनेकता में एकता ही हमारे समाज की ताक़त है। हमारे नाम, रंग, भाषा, खानपान, मज़हब भले ही अलग हों मगर हम एक दूसरे से कभी अलग नहीं हो सकते क्योंकि इन्सानियत और देश इन दोनों ने ही हमें जोड़ रखा है। अब इस देश को आगे बढ़ाना, पूरे विश्व में भारत का नाम रोशन करना आपकी ज़िम्मेदारी है क्योंकि आप ही कल के स्वामी विवेकानंद और डॉ. अब्दुल कलाम हैं। इस पुस्तक की हर कहानी अनोखी और दिलचस्प है, जिससे आपको एक अच्छा मैसेज देने की कोशिश की गई है। यह पुस्तक प्रसिद्ध कहानीकार जनाब मोहम्मद अली शाह शोएब साहब ने ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन की फ़रमाइश पर लिखी है, जिसका मक़सद बच्चों में अख़लाक़ी, इंसानी और समाजी भावना को जगाना है।

हमें उम्मीद है कि हमारी अन्य पुस्तकों की तरह इस पुस्तक को भी हाथों-हाथ लिया जाएगा। अन्त में हम आपसे गुज़ारिश करते हैं कि इस पुस्तक को पढ़ने के बाद यदि आप हमें किसी कहानी या पुस्तक पर अपने हाथ से लिखे हुए रिव्यू या वीडियो मैसेजेज़ भेजें, तो हम उन्हें आपके नाम और फ़ोटो के साथ वेबसाइट पर शेयर करेंगे। अगर आप ख़ुद कहानियाँ लिखते हैं, तो उन्हें भी भेजें, हम उन्हें प्रकाशित करने की कोशिश करेंगे। ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन कोई कॉमर्शियल संस्था नहीं बल्कि एक चैरिटेबल ट्रस्ट है जो सामाजिक सद्भाव, एकता और अखण्डता को लिटरेचर के ज़रिए बढ़ावा देता है। आप अपने लेख और मैसेजेज़ के ज़रिए हमसे जुड़ सकते हैं और हमारी किताबों के उद्देश्य को आगे बढ़ाने में सहयोग कर सकते हैं।

धन्यवाद।

डॉ. हफ़ीज़ुर्रहमान

संयोजक
ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन

1. सारा संसार एक परिवार

मानकपुर शहर में कपड़े की एक बहुत पुरानी दुकान थी। उस दुकान से सभी समुदायों के लोग कपड़ा लेने आया करते थे। दुकानदार बड़े ही सज्जन व्यक्ति थे, बिना किसी भेदभाव के लोगों के साथ प्रेम-भाव से पेश आते थे। शहर में इनकी ईमानदारी और अच्छा स्वभाव मशहूर था। लेकिन अब वे बूढ़े हो गए थे। इसके चलते उनका बेटा गुड्डू दुकान पर बैठने लगा। गुड्डू की संगत कुछ अच्छी नहीं थी जिससे उसका स्वभाव अपने पिता से बिलकुल अलग था।

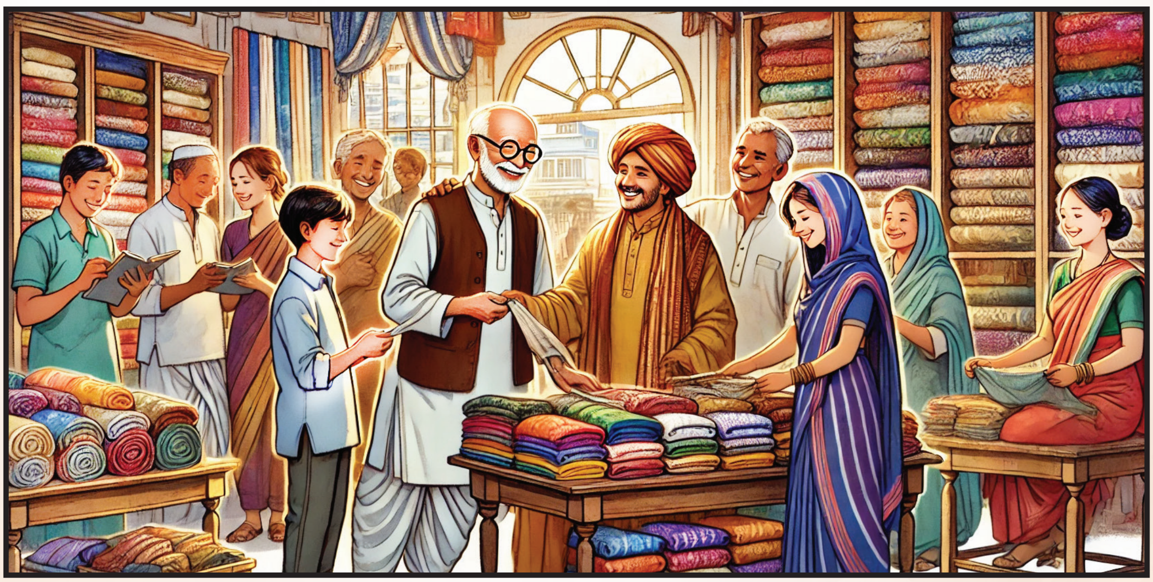

एक दिन दो लड़के कपड़ा ख़रीदने के बहाने दुकान में घुसे और उस पर चाक़ुओं से हमला कर दिया और बुरी तरह ज़ख़्मी करके भाग गए। गुड्डू की चीख़ सुनकर दो-तीन लोग भागते हुए आए और गुड्डू को उठाकर अस्पताल ले गए। उन लड़कों ने गुड्डू को इमरजेंसी में भर्ती करा दिया।

अस्पताल के भीतर थोड़ी देर के बाद एक जूनियर डॉक्टर गुड्डू को देखने के लिये आया।

“अरे यह क्या! यह तो वही कपड़े वाला है जो हमारे मज़हब के ख़िलाफ़ बोलता रहता है।” डॉक्टर उसे ज़ख़्मी हालत में ही छोड़कर कुछ बड़बड़ाता हुआ बाहर निकल गया, मानो वह भी उसे मार ही देना चाहता था।

गुड्डू की हालत नाज़ुक होती जा रही थी। उसकी हालत देखकर जो लड़के उसे लेकर आए थे फ़ौरन सीनियर डॉक्टर के पास गए। डॉक्टर फ़ौरन दौड़ता हुआ आया और इलाज शुरू कर दिया।

"शरीर से ख़ून ज़्यादा बह गया है, हमें फ़ौरन ब्लड की ज़रूरत होगी।" डॉक्टर ने कहा। उन लड़कों में से एक लड़का फ़ौरन ब्लड देने के लिये भी तैयार हो गया।

इस तरह धीरे-धीरे गुड्डू की हालत सुधरने लगी। अब डॉक्टर अपने उस जूनियर को एक तरफ़ ले गया और बोला : जब तुमने इस मरीज़ की हालत नाज़ुक देखी थी तो तुम उसे छोड़कर क्यों चले गए थे।

"डॉक्टर साहब! क्या आपको नहीं मालूम कि यह हमारे मज़हब के ख़िलाफ़ बोलता रहता है? इसने पूरे शहर में हमारे मज़हब के ख़िलाफ़ ज़हर फैला रखा है।" जुनियर डॉक्टर ने कहा।

डॉक्टर उसकी हरकत पर पहले ही से नाराज़ था, उसकी बातों से उसका ग़ुस्सा और बढ़ गया। जूनियर अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोला : "डॉक्टर साहब! इस शख़्स का तो मर जाना ही हमारे लिये बेहतर है। इसकी वजह से शहर में हमारा मज़हब

ख़तरे में पड़ गया है।" सीनियर डॉक्टर के लिये उसकी बेहूदा बातें जब बर्दाश्त से बाहर हो गईं तो उसे एक ज़ोरदार थप्पड़ रसीद करते हुए कहा : "उस आदमी से ज़्यादा तुम जैसे लोग मज़हब के लिये ख़तरा बने हुए हैं। तुम यह कैसे भूल सकते हो कि मरीज़ का इलाज करना ही इस वक़्त

तुम्हारा मज़हब है, यही तुम्हारी सबसे पहली ज़िम्मेदारी है। क्या तुमने अपनी मज़हबी किताब पढ़ी है? अगर तुम पढ़ते तो मालूम होता कि "किसी एक इन्सान की जान बचाना, पूरी इन्सानियत की जान बचाने के बराबर है। और एक इन्सान को मारना (या मरने के लिये छोड़ देना) पूरी इन्सानियत का क़त्ल कर देना है।" (क़ुरआन 5:32) अगर तुम अपनी किताब को पढ़ते तो तुम्हें मालूम होता कि किसी भी इन्सान की इज़्ज़त करने के लिये बस इतनी बात काफ़ी है कि वह एक इन्सान है। क्योंकि हम सबके बनानेवाले ने "इन्सान को सबसे ज़्यादा क़ाबिले-इज़्ज़त बनाया है।" (क़ुरआन 17:70)

यह बात सुनकर जूनियर डॉक्टर को धचका सा लगा, मानो उसकी दुनिया ही बदल गई हो। अब उसने वादा किया कि वह अपनी ज़िम्मेदारी के तईं वफ़ादार रहेगा और किसी के बहकावे में आकर किसी भी इन्सान के साथ मज़हब की बुनियाद पर कोई

भेदभाव हरगिज़ नहीं करेगा। गुड्डू के ज़ख़्मी हो जाने की ख़बर सुनकर उसके घर वाले और दोस्त भी अस्पताल आ पहुँचे। गुड्डू को होश आ चुका था और अब वह काफ़ी बेहतर महसूस कर रहा था। गुड्डू के पिता एक अच्छे और सुलझे हुए इन्सान थे। वे

अपने बेटे को समझा रहे थे :

“बेटा! मैंने तुम्हें समझाया था कि किसी धर्म के ख़िलाफ़ नफ़रत फैलाने का काम न ख़ुद करो न इस काम में किसी का साथ दो, लेकिन तुमने बात नहीं मानी, जिसका नतीजा तुमने अपनी आँखों से देख लिया।”

गुड्डू ने ग़ुस्से में कहा : “पिता जी! आप नहीं जानते इन लोगों के कारण हमारी संस्कृति और धर्म संकट में है। ये हमारे देश के विकास में रुकावट बने हुए हैं और हमारे देश में आतंकवाद फैला रहे हैं।”

“बेटा! धर्म को उनसे ज़्यादा ख़तरा तुम्हारी जैसी सोच से है। क्या तुमने अपने धर्म की कोई किताब पढ़ी है? अगर पढ़ते तो तुमको मालूम होता कि हम "वसुधेव कुटुंबकम" वाली संस्कृति को मानते हैं। हमारी संस्कृति बताती है कि भाषा, क्षेत्र, जाति और धर्म अलग-अलग होने के बावजूद इस धरती पर रहनेवाले सब एक परिवार हैं। हमारी पुस्तकें कहती हैं कि अपने दिल से घृणा और इर्ष्या को निकाल कर एक सच्चा इन्सान बन जाना ही धार्मिक होने की पहचान है।”

पिता जी ने थोड़ा कड़क लहजे में बात करते हुए कहा।

“पिता जी! आपको नहीं मालूम ये लोग प्यार की भाषा नहीं जानते। इन लोगों से हमें बहुत नुक़सान पहुँच रहा है। अब हम चैन से नहीं बैठेंगे जो कुछ इन लोगों ने मेरे साथ किया है इसका बदला तो हम लेकर रहेंगे, मैंने अपने लोगों को फ़ोन कर दिया है, वे लोग आते ही होंगे, फिर देखना क्या होता है। हमने चूड़ियाँ नहीं पहन रखी हैं।”

गुड्डू ने झुँझलाहट में फिर कहा।

पिता जी बोले : "बेटा, क्या तुम्हें मालूम है इस समय जिस डॉक्टर ने तुम्हारी जान बचाई है वह उसी मज़हब का इन्सान है जिसके प्रति तुम लोगों के कहने में आकर नफ़रत फैला रहे हो। और जिसने तुम्हें ब्लड दिया है वह भी उसी मज़हब का व्यक्ति है जिससे तुम नफ़रत करते हो।

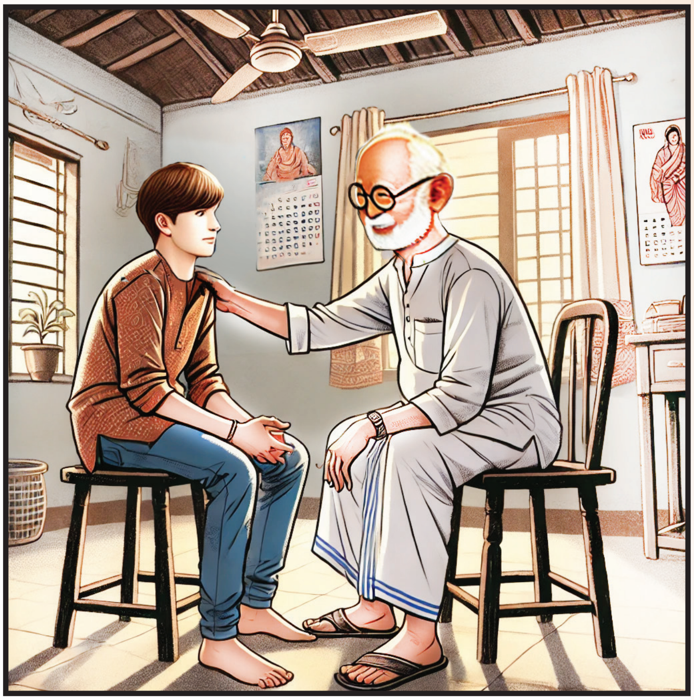

बेटा! अगर कुछ लोग किसी मज़हब में ग़लत हैं तो इस आधार पर तुम पूरे समुदाय को कटघरे में कैसे खड़ा कर सकते हो?"

पिता जी की यह बात सुनकर गुड्डू के सर पर घड़ों पानी पड़ चुका था। अब उसे मन ही मन इस बात का पछतावा हो रहा था कि उसने जो कुछ किया था वह ग़लत था, उसकी सोच ग़लत थी। उसने पिताजी से क्षमा माँगी और फिर कभी ऐसी नफ़रत न फैलाने का वचन दिया। पिता जी ने फिर समझाते हुए कहा, "सोचने की बात यह है कि यदि हम अपनी-अपनी धार्मिक पुस्तकें भी ढंग से पढ़ लें तो हमारी संकुचित सोच विकसित होने लगेगी और हमारे दिलों से धर्म और जाती के आधार पर नफ़रत ख़त्म हो जाएगी।

"अगर हम सब मिलकर अपने देश और समाज की उन्नति और विकास के बारे में

सोचें और अपनी तरफ़ से अपना बेस्ट उसके लिये लगा दें तो हमारा देश इतना ख़ुशहाल होता चला जाएगा कि आसपास के देश भी हमारी मिसाल देंगे।"

सीख : इस कहानी से बच्चों को यह सीख मिलती है कि किसी भी व्यक्ति या समुदाय के प्रति नफ़रत और भेदभाव रखना न केवल ग़लत है, बल्कि समाज के लिये हानिकारक भी है। हर इंसान की इज़्ज़त करनी चाहिये, चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, या क्षेत्र का हो। धार्मिक पुस्तकों की शिक्षाओं को समझकर और उनका पालन करके, हम नफ़रत और पूर्वाग्रह से मुक्त होकर एक बेहतर इंसान बन सकते हैं। साथ ही, यह भी समझने की ज़रूरत है कि किसी समुदाय के कुछ लोगों की ग़लतियों के आधार पर पूरे समुदाय को दोषी ठहराना उचित नहीं है। अगर हम आपसी प्रेम और सहयोग के साथ मिलकर समाज और देश के विकास के लिये कार्य करेंगे, तो हमारा देश हर दृष्टि से खुशहाल और आदर्श बन जाएगा।

2. मज़हब की अफ़ीम

रुख़सती का माहौल था, राशिदा के वालिद की अजीब कैफ़ियत थी, आँखों में आँसू थे मगर ज़बान पर ख़ुदा के शुक्र के अलफ़ाज़ थे कि अल्लाह ने बेटी की शक्ल में जो नेमत अता की थी उसकी बड़े ही चाव से परवरिश की, बड़ी ही मुहब्बत और शफ़क़त (स्नेह) के साथ तालीम व तरबियत की; और अब वह वक़्त भी आख़िरकार आ ही गया कि कफ़ील के साथ निकाह भी कर दिया।

राशिदा को कार में बिठा दिया गया तो कफ़ील ने भी अपने ससुर साहब और दूसरे रिश्तेदारों को सलाम किया और कार के अन्दर पिछली सीट पर राशिदा की बराबर में बैठ गया।

गाड़ी जैसे ही आगे बढ़ी तो राशिदा के घरवालों की हालत और भी अजीब हो गई। रशीदा की अम्मी और बहनें तो फूट-फूट कर रो रही थीं।

कफ़ील सोचता जा रहा था कि लड़कियों के लिये ये शादी भी बड़ी ही अजीब चीज़ है। इसमें ख़ुशी और ग़म के मिले-जुले भाव देखने को मिलते हैं। बेटी के जुदा होने का ग़म होता है तो एक फ़र्ज़ के अदा होने पर अन्दर से ख़ुशी का एहसास, बेटी की एक नई

ज़िन्दगी की शुरूआत पर ख़ुशी के जज़्बात होते हैं तो मुस्तक़बिल के अन्देशे दामनगीर हो जाते हैं।

बहरहाल कफ़ील और राशिदा की कार शहर की चमक-दमक और क़ुमक़ुमों से गुज़रती हुई बाहर निकली तो सड़क पर सन्नाटा पसरा हुआ था। कार की हेड-लाइट की रौशनी के सिवा कोई रौशनी नहीं थी। कफ़ील अपनी ज़िन्दगी के इन्तिहाई ख़ुशगवार लम्हों से गुज़र रहा था। बहुत-सी उम्मीदें उसे मुस्कुराती नज़र आ रही थीं। ज़ेहनो-दिमाग़ में ख़ुशी के जज़्बात उमड़-उमड़ कर आ रहे थे, उसे लग रहा था कि वह कार में नहीं बल्कि किसी ख़ुशगवार फ़िज़ा में सैर कर रहा है। कार की बाहर की तरफ़ अँधेरा ज़रूर था लेकिन कार के अन्दर उसे राशिदा की शक्ल में ज़िन्दगी की सुबह नमूदार होती नज़र आ रही थी।

गाड़ी के ड्राइवर की लाज थी या डर जिसकी वजह से कफ़ील ने राशिदा से एक दूरी बनाई हुई थी मगर दिल के अन्दर जज़्बात इस क़दर उमड़ रहे थे कि अभी बाहों में भर ले, फिर भी कफ़ील की निगाहे-शौक़ बार-बार राशिदा पर पड़ जाती थी और दिल उछल-उछल जाता। उसकी चोर निगाहें दुल्हन के घूँघट में से गुज़र कर नशीली और लजाई हुई आँखों को ढूँढ रही थीं, जिनमें उसकी पुर-जोश मुहब्बत का जवाब छिपा हुआ था। कफ़ील के दिल में एक अजीब सी बेचैनी थी, जैसे उसके जज़्बात को राशिदा की ख़ामोशी सुन रही हो।

कफ़ील की हर नज़र मानो ये कह रही थी कि किसी तरह वो पल आ जाए जब दिल की हर बात ज़बाँ पर आए और राशिदा की झुकी हुई पलकों के पीछे का हर जवाब उसकी बाँहों में सिमट जाए। राशिदा की झुकी पलकों की हलचल और उसके घूँघट की सरसराहट, कफ़ील के दिल में जैसे एक नया सुर छेड़ रही थी, मानो उसकी हर धड़कन राशिदा के प्यार का नग़मा बन गई हो।

कार सड़क पर सरपट दौड़े जा रही थी और कफ़ील के ज़ेहन व दिमाग़ में ख़ुशी और मसर्रत के जज़्बात जोश मार रहे थे। अचानक एक तेज़ रफ़्तार गाड़ी बराबर से निकलती हुई उसकी कार के सामने आ गई। ड्राइवर ने अचानक से ब्रेक लगाए और एक इन्तिहाई ख़ौफ़नाक आवाज़ के साथ गाड़ी रुक गई। ये सब कुछ इतनी तेज़ी से हुआ कि सबके दिल दहल कर रह गए और राशिदा चीख़ मारकर कफ़ील से लिपट गई।

सामने वाली गाड़ी से 3 हट्टे-कट्टे नौजवान बहुत तेज़ी के साथ बाहर निकले और ड्राइवर की तरफ़ लपके। दरवाज़ा खोलकर ड्राइवर के सर पर कोई भारी चीज़ मारी जिससे उसका ख़ून बहने लगा। राशिदा बुरी तरह कफ़ील से लिपटी हुई थी लेकिन कफ़ील डर के मारे पीला पड़ गया था।

कफ़ील ने राशिदा को और भी मज़बूती से अपनी बाँहों में भर लिया, मानो उसे इस डरावने मंज़र से बचा लेना ही उसकी ज़िंदगी का मक़सद हो। लेकिन उसकी

काँपती हुई उंगलियाँ और दिल की बेतहाशा धड़कन इस बात का सबूत थीं कि डर उसके इरादों को तोड़ने की कोशिश कर रहा था। तभी एक दूसरे देव-हेकल जवान ने राशिदा की तरफ़ की खिड़की खोली और पूरे ज़ोर के साथ राशिदा को बाहर खींचने की कोशिश की।

राशिदा की चीख़ कफ़ील के दिल को चीर गई, और उसका सारा डर अचानक ग़ुस्से और बेबसी में बदल गया। उसने पूरी ताक़त से राशिदा का हाथ थामने की कोशिश की, लेकिन उसकी पकड़ ढीली पड़ गई, और वो देखता रह गया जैसे उसकी पूरी दुनिया उससे छिन रही हो।

इस हरकत पर कफ़ील के दिल से मानो सारा डर काफ़ूर हो गया और कफ़ील झट से बाहर निकल कर उन बदमाशों की तरफ़ बढ़ा। लेकिन इतनी देर में ही बदमाशों ने राशिदा के गले से हार, कानों से बुन्दे और दूसरे ज़ेवरात छीन लिये थे और उसे बहुत ज़ोर से सड़क की बराबर वाली खाई में धक्का दे दिया था। इस नज़ारे को देखकर कफ़ील ने पूरे ज़ोर के साथ चीख़ मारी राशिदा........ !

इस चीख़ को सुनकर राशिदा घबरा गई जो बराबर में ही उसके बिस्तर पर सो रही थी और ये बहुत ही ख़ौफ़नाक ख़्वाब था जो कफ़ील देख रहा था।

राशिदा ने कफ़ील! कफ़ील! कहकर आवाज़ लगाई तो कफ़ील की आँखें खुल गईं। कफ़ील पसीनों में शराबोर था और दिल राजधानी की रफ़्तार से धड़क रहा था। राशिदा ने उसे अपने सीने से चिमटा लिया। कफ़ील अपने हाथों से राशिदा के नरम-नरम हाथों और चेहरे को छूकर उस ख़ौफ़नाक ख़्वाब से बाहर आने की कोशिश कर रहा था। जब उसे यक़ीन हो गया कि वह सब एक ख़्वाब था तो कफ़ील की जान में जान आई। राशिदा ने उसके बालों में हाथ फेरते हुए कहा, 'मैं यहीं हूँ कफ़ील, तुम्हारे साथ।'

कफ़ील ने उसकी बात सुनकर राहत की साँस ली और उसकी आँखों में झाँकते हुए महसूस किया कि उसकी सारी दुनिया राशिदा की बाहों में महफ़ूज़ है। कफ़ील ने राशिदा को अपनी बाहों में भर लिया और मुहब्बत का इज़हार करने लगा। राशिदा! मैं तुम से बहुत मुहब्बत करता हूँ। मैं तुम्हारे बग़ैर एक पल नहीं गुज़ार सकता। तुम मेरी ज़िन्दगी हो। तुम्हारे आने से मेरी ज़िन्दगी में बहार आ गई है। तुम्हारी मीठी बोली मेरे कानों में रस घोलती रहती है। मुझे तुम्हारा क़रीब होना बहुत पसन्द है। और अब तो हमारे प्यार की निशानी हमारा बच्चा भी इस दुनिया में आने वाला है। हम इस बच्चे को ख़ूब पढ़ाएँगे, इस बच्चे को हम दोनों मिलकर एक अच्छा इन्सान बनाएँगे। एक ऐसा इंसान जो हर दिल में मोहब्बत का दिया जलाए और हर जात-पात, मज़हब से ऊपर उठकर दुनिया को एक बेहतर जगह बनाए। हमारा बच्चा दूसरों के लिये एक मिसाल बनेगा, जो प्यार और अमन का पैग़ाम फैलाएगा।

दोनों के दरम्यान अभी ये मुहब्बत भरी बातें चल ही रही थीं कि कफ़ील का फ़ोन

बजने लगा। फ़ोन उठाकर देखा तो उसका दोस्त अजय था। फ़ोन रिसीव किया तो उधर से अजय बहुत घबराया हुआ था। बोला :

"कफ़ील अपना ख़याल रखना, शहर में दंगा हो गया है। हालात बहुत ख़राब हो गए हैं। हमारी तरफ़ की एक उन्मादी भीड़ तुम्हारे मोहल्ले की तरफ़ गई है। वे लोग तुम्हारे भाई को तलाश कर रहे हैं। कुछ भी हो सकता है।"

"अरे मगर हुआ क्या है?" कफ़ील ने हैरत से पूछा।

"वो सब मुझे नहीं मालूम, बस तू अपना ख़याल रखना, मेरे भाई। कहीं जाकर छिप जा।" अजय ने घबराते हुए जवाब दिया।

अभी अजय और कफ़ील फ़ोन पर बातें कर ही रहे थे कि बहुत तेज़ी के साथ दरवाज़ा बजने लगा। कफ़ील ने भागकर दरवाज़ा खोला तो 5-6 उन्मादी नौजवान "जय-श्री राम" का नारा लगाते हुए घर में घुस गए और गालियाँ बकने लगे। घर का सामान तोड़ने फोड़ने लगे।

कफ़ील ने उनसे प्यार से पूछा : क्या हुआ? आप लोग ये सब क्यों कर रहे हैं?

उनमें से एक ने कहा : “अफ़ज़ल को कहाँ छिपा रखा है? उसे बाहर निकाल।”

"वह तो यहाँ नहीं है। आख़िर उसने क्या किया है?" कफ़ील ने कड़क आवाज़ में पूछा।

"मैं बताता हूँ उसने क्या किया है।" उनमें से एक बोला

"उसने हमारी दुकानों में आग लगा दी है। नाराए-तकबीर बोल-बोलकर नौजवानों की भीड़ इकट्ठी की और पूरे मोहल्ले में ताण्डव किया है। कहता है इस देश में ख़िलाफ़त क़ायम करेंगे, शरीया लागू करेंगे। हम देखते हैं कैसे शरीया लागू करेंगे?....निकाल बाहर उसको।"

"मैं आप लोगों को बता चुका हूँ कि वह घर में नहीं है। और मैं उसकी तरफ़ से माफ़ी माँगता हूँ। वह नादान है, उसे ऐसा नहीं करना चाहिये था।" कफ़ील ने उन्हें समझाते हुए कहा।

लेकिन उन्होंने उसकी एक न सुनी, पेट में एक ज़ोरदार मुक्का मारा और बोला : नाटक मत कर, जल्दी बता अफ़ज़ल कहाँ है। मुक्का लगते ही कफ़ील की चीख़ निकली तो राशिदा उसको बचाने के लिये दौड़ी। उन्मादी लोगों में से एक ने उसे बालों से पकड़ा और ज़मीन पर पटख़ दिया।

इतना कहते ही एक ने कफ़ील को ज़ोर से डण्डा मारा। यह देखकर राशिदा फिर से कफ़ील की तरफ़ लपकी, तो एक दूसरे शख़्स ने उसे पकड़ लिया और इतनी ज़ोर से धक्का दिया कि उसका सर दीवार में जाकर लगा। वो ज़मीन पर गिर पड़ी और नाक से ख़ून बह निकला। गिरने के बाद उसने पेट में एक लात और मारी, वह गिरकर बेहोश हो गई। उसकी हालत देखकर सब लोग घबरा गए और उसी हालत में छोड़कर वे सब भाग गए। कफ़ील राशिदा से लिपट कर रोने लगा और उसे आवाज़ें देने लगा।

लेकिन वह बेहोश हो चुकी थी। कफ़ील बाहर की तरफ़ भागा कि उसे हॉस्पिटल तक ले जाने के लिये किसी से मदद माँगे। लेकिन बाहर पूरी तरह से सन्नाटा था। उसने आस-पास के लोगों के घरों के दरवाज़े भी पीटे, लेकिन दहशत के मारे किसी ने दरवाज़ा नहीं खोला। वह रोता-बिलखता हुआ किसी सवारी की तलाश में चौक तक जा पहुँचा, लेकिन कोई नहीं मिला जो उसकी मदद करता।

चौक पर जैसे ही पहुँचा तो वहाँ पुलिस आ गई। वह पुलिस जीप की तरफ़ लपका। लेकिन पुलिस वालों ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया, बल्कि दो पुलिस वालों ने उतर कर उस पर लाठियाँ भाँजनी शुरू कर दीं। और वहाँ से फ़ौरन भाग जाने का हुक्म दिया। आख़िरकार वापस अपने घर में आ गया। राशिदा अभी भी उसी हालत में बेहोश पड़ी थी। कफ़ील फिर से धाड़ें मारता हुआ बाहर निकला। अबकी बार दूसरा रास्ता उसने लिया जो मेन रोड की तरफ़ निकलता था। उसी तरफ़ उसका

एक दोस्त विक्रम रहता था। वह रोता हुआ उसके घर पहुँच गया और दरवाज़ा खटखटाया। अन्दर से आवाज़ आई "कौन?"

"मैं हूँ कफ़ील, विक्रम का दोस्त। "कफ़ील ने रोते-रोते बताया।

विक्रम के पिता जी बहुत ही सज्जन आदमी थे, उन्होंने फ़ौरन दरवाज़ा खोला और बोले : "क्या हुआ बेटा?"

"अंकल मेरी वाइफ़ को बचा लीजिये। उसे कुछ गुंडों ने घर में घुस कर मार डाला।" कफ़ील ने बिलखते हुए कहा।

विक्रम के पिता जी ने फ़ौरन अपनी कार निकाली और कफ़ील के घर पहुँच गए। उन्होंने राशिदा को गाड़ी में लिटाया और फ़ौरन अस्पताल पहुँच गए। थोड़ी ही देर में विक्रम भी वहाँ पहुँच गया और कफ़ील को तसल्ली दी। डॉक्टर्स ने बताया कि ख़ून काफ़ी बह गया है दिमाग़ में काफ़ी गहरी चोट है। हमें फ़ौरन 2 यूनिट ब्लड की ज़रूरत है। कफ़ील और विक्रम दोनों ने फ़ौरन अपना ख़ून दिया और इस तरह दो

दिन आई-सी यू में रहने के बाद राशिदा की हालत कुछ बेहतर हुई। लेकिन डॉक्टर्स कफ़ील की नन्हीं सी जान को नहीं बचा पाए। उधर अफ़ज़ल को पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया था, वह भी दो दिन थाने में रहने के बाद घर वापस आ गया था। घर में एक तरह का मातम सा छाया हुआ था।

अफ़ज़ल ने कहा : उन्होंने हमारे साथ जो कुछ किया है हम इसका बदला ज़रूर लेंगे।

"वे भी बदला ही तो लेने आए थे। बदला लेने आए थे तुम्हारी की हुई करतूतों का।" कफ़ील ने गुस्से भरे लहजे में कहा।

"और ये बदला तुम किस से लोगे? जबकि न तुम जानते हो और न मैं कि वे कौन लोग थे?" कफ़ील ने ग़ुस्से और हैरत भरे अन्दाज़ में पूछा।

"हम पूरी क़ौम से बदला लेंगे, जिस तरह उन्होंने हमारे घर में घुस कर तोड़-फोड़ की और भाभी को और आपको मारा है, हम भी उनके घर में घुस कर मारेंगे। हमने भी कोई चूड़ियाँ नहीं पहन रखी हैं।"

अफ़ज़ल ने पूरे ग़ुस्से में आकर कहा।

"तुम्हारी इसी सोच की वजह से आज मैं अपने बच्चे से महरूम हो गया और मेरी वाइफ़ हॉस्पिटल में ज़िन्दगी की जंग लड़ रही है।" कफ़ील बोला।

"अब हमने क्या किया है भय्या?" अफ़ज़ल ने झुँझलाकर पूछा।

"मैं बताऊँ तुमने क्या किया है? तुमने दीन को समझा ही नहीं है, हाँ तुमने मज़हब के नाम की अफ़ीम ज़रूर पी रखी है, जो तुम्हें एक दीनी इन्सान तो बहुत दूर एक अच्छा इन्सान बनने से भी रोक देती है। " कफ़ील बोला

"तुम्हें दुनिया में ख़ुदाई हुकूमत क़ायम करनी है न?" कफ़ील ने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा।

अफ़ज़ल बोला : "जी, हाँ वह तो हमारी दीनी ज़िम्मेदारी है।"

"और ये ज़िम्मेदारी तुम्हें दी किसने है?" कफ़ील बोला।

अफ़ज़ल बोला : "हमारे दीन ने, और हमारे क़ुरआन ने।"

"अच्छा!.... क्या तुमने अपने ऊपर ख़ुदाई हुकूमत क़ायम कर रखी है, जो तुम दुनिया में ख़ुदाई हुकूमत क़ायम करने निकल पड़े हो? तुम्हें ख़ुदा ने तमाम इन्सानों के साथ ख़ैर और भलाई के लिये निकाला था। क्या तुमसे किसी एक इन्सान को भी ख़ैर और भलाई पहुँच रही है?

"क़ुरआन ने तुम्हें हुक्म दिया था कि लोगों के साथ हुस्ने-सुलूक (अच्छे बर्ताव) से पेश आओ, कोई दुश्मन भी अगर तुम्हारे साथ बुराई करे तो उसका बदला तुम बेहतरीन भलाई से दो, अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम देखोगे कि तुममें और उनमें जो दुश्मनी पड़ी हुई है वो दोस्ती में बदल जाएगी।.... और याद रखो हमारा ख़ुदा इन्सानों के दरम्यान दुश्मनी नहीं चाहता बल्कि दोस्ती, प्यार और मुहब्बत चाहता है।

"क्या तुमने कभी किसी के साथ अच्छा सुलूक किया है? जबकि उनकी क़ौम ने मेरे साथ अच्छा सुलूक किया है। वो मेरी वाइफ़ को अपनी गाड़ी में डालकर न सिर्फ़ अस्पताल तक ले गए बल्कि अपना ख़ून भी दिया। आज उनके अच्छे सुलूक की वजह से मेरी बीवी ज़िन्दा है। और तुम उन चन्द ग़ुंडों की हरकत का बदला लेने के लिये किसी भी घर में घुसकर वही सब कुछ करोगे जो उनकी क़ौम के कुछ ग़ुंडों ने हमारे साथ किया।"

कफ़ील पूरे ज़ोर के साथ अपनी बात कहे चला जा रहा था।

घर के अन्दर एक सन्नाटा था, मानो अफ़ज़ल को अब अपने किये पर भी और अपनी सोच पर भी पछतावा हो रहा था। और कफ़ील की आवाज़ में भी कुछ नर्मी सी आती जा रही थी।

"अफ़ज़ल, मेरे भाई! इस नफ़रत को मिटाना होगा, हमारे दीन और क़ुरआन ने हमें सबसे पहली ज़िम्मेदारी ये दी है कि हम समाज में अम्न क़ायम करें, लोगों को और समाज को देने (contribution) की पोज़िशन में आएँ। क़ुरआन ने हमें माफ़ी और

दरगुज़र से काम लेने की हिदायत की है। हमारे नबी ने हमें बताया है कि नरमी और माफ़ी पर हमारा अल्लाह हमें वो कुछ अता करता है जो किसी और अमल पर अता नहीं करता। ये दीन किसी तरह की अफ़ीम नहीं है कि कोई भी उसे अपने दिमाग़ में उंडेल ले और समाज में शान्ति को भंग करने की कोशिश करे बल्कि हमारे नबी ने हमें यह शिक्षा दी है कि सारी दुनिया ख़ुदा का कुंबा है, और इस कुंबे में सबसे बेहतर इन्सान वो है जो कुंबे के दूसरे लोगों के लिये ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदेमंद साबित होता है।"

अफ़ज़ल आगे बढ़कर अपने भाई के गले से लग जाता है और वादा करता है कि अब उसकी कोशिशें समाज में अम्न व सलामती क़ायम करने की होगी, नफ़रत फैलाने की नहीं।

सीख : इस कहानी से बच्चों को यह सीख मिलती है कि सच्चा धर्म दूसरों के साथ भलाई और इंसानियत को बढ़ावा देने का नाम है, न कि बदले की भावना या हिंसा को बढ़ावा देने का। हमें अपने कर्मों से यह साबित करना चाहिये कि हम अच्छे इंसान हैं, और किसी के साथ बुरा व्यवहार करने से समस्याओं का समाधान नहीं होता, बल्कि और ज़्यादा नुक़सान होता है। धर्म को समझने और उसके असली सन्देश पर चलने से ही समाज में शान्ति और सद्भाव स्थापित हो सकता है।

3) एकता चौक

राज़ीपुर शहर के बीचों-बीच एक चौक है जिसका नाम है एकता चौक, जिसके एक तरफ़ मस्जिद है तो दूसरी तरफ़ मन्दिर। मस्जिद की तरफ़ मोहल्ला करीम नगर है तो मन्दिर की तरफ़ वाला मोहल्ला शिवपुरी कहलाता है। ये मन्दिर और मस्जिद कभी एकता के प्रतीक रहे होंगे तभी इस चौक का नाम एकता चौक पड़ा होगा, लेकिन आज यह चौक नफ़रत का चौक बनकर रह गया है। मानो ये मस्जिद और मन्दिर इबादतगाह नहीं हैं, बल्कि दो मुल्कों की सरहद हैं।

एक ज़माना था कि जब करीम नगर में अशोक, बब्बन और राजीव आदि की कपड़े,

बर्तन और परचून की दुकानें हुआ करती थीं और शिवपुरी में अशफ़ाक़, बलबन और शफ़ीक़ वग़ैरा की जूते, हलवाई और बेकरी की। लेकिन दंगों के दौरान ये सब दुकानें जलकर स्वाहा हो गईं।

जिस मन्दिर से भजन और कीर्तन की और जिस मस्जिद से अज़ान की मधुर और सुरीली आवाज़ें आया करती थीं आज उन्हीं से नफ़रत के शोले भड़क रहे हैं। जैसे ही मस्जिद में अज़ान शुरू होती है बहस में मन्दिर से उससे भी तेज़ आवाज़ में भजन की आवाज़ें आने लगती हैं और जैसे ही मन्दिर से कीर्तन की आवाज़ आनी शुरू होती है उसके बहस में मस्जिद से बे-वक़्त की हम्द और नअत पढ़ने की आवाज़ें तेज़ हो जाती हैं। और इस सब शोर के बीच कान पड़ी आवाज़ सुनाई नहीं देती है, पढ़नेवाले और वर्क-फ़्रॉम होम करने वाले बच्चे और बड़े दाँत पीस कर रह जाते हैं। ये सब नौजवान सोचते हैं कि धर्म के इस झगड़े में उनका नुक़सान क्यों किया जा रहा है? मगर जब धार्मिक अन्ध-भक्ति कि पट्टी आँखों पर बाँध ली जाती है तो कुछ भी अच्छा दिखाई नहीं देता।

आज राम-नवमी और ईद मीलादुन्नबी एक ही साथ मनाई जानी है। दोनों तरफ़ तैयारियाँ ज़ोरों से चल रही हैं। दोनों तरफ़ से जुलूस निकाले जाने हैं। बल्कि जुलूसों की आड़ में अपने-अपने दिलों की भड़ास भी निकाली जानी है। जहाँ एक तरफ़ पुलिस प्रशासन शहर में अम्न और शान्ति के लिये फ़िक्रमन्द है तो दूसरी तरफ़ मीडिया को अपनी टी आर पी बढ़ाने की फ़िक्र है। तमाम चैनल इस बात की कोशिश में हैं कि पहला पत्थर जिस तरफ़ से भी आए लेकिन वो सबसे पहले उसके कैमरा में क़ैद होना चाहिये। शहर की फ़िज़ा में एक अजीब सा तनाव तैर रहा है, मानो हर चेहरा मुस्कुराहट के पीछे कोई अनकही आशंका छुपाए हुए हो, और हर आँख ये देख रही हो कि चिंगारी कब और कहाँ भड़केगी।

जैसे-जैसे घड़ी की सूई आगे बढ़ रही थी पुलिस प्रशासन की दिल की धड़कने बढ़ती चली जा रही थीं। लॉ एंड आर्डर को मेन्टेन रखने की अपीलें पुलिस की तरफ़ से की जा रही थीं, मगर किसी भी तरह की सिचुएशन से निपटने के लिये अतिरिक्त पुलिस बल और फ़ौज की कुछ टुकड़ियाँ तैनात भी कर दी गई थीं। सड़कों पर बैरिकेड्स लगा दिये गए थे, और हर चौराहे पर पुलिस की पैनी निगाहें टिकी हुई थीं। फ़िज़ा में ऐसा सन्नाटा था, जैसे कोई बड़ा तूफ़ान आने से पहले की ख़ामोशी छाई हो।

आख़िर वो घड़ी आ ही गई जिसका मीडिया को इन्तिज़ार था। करीम नगर की तरफ़ से गलियों में नौजवान अपने हाथों में लाठी और बरछे लिये हुए तेज़ी से चौक की तरफ़ बढ़ रहे थे तो शिवपुरी की तरफ़ से भी हाथों में तलवार और छुरे-चाक़ू लिये नौजवान चौक की तरफ़ बढ़ रहे थे। सभी मकानों के दरवाज़े तो बंद थे मगर खिड़कियों से नज़ारा देखने के लिये औरतों और बच्चों के सहमे हुए चेहरे साफ़ देखे जा सकते थे।

पुलिस पूरी तरह से अलर्ट थी, एसएसपी और डीएम साहब चौक पर खड़े लोगों से शान्ति की अपील कर रहे थे, मीडिया वालों के कैमरा ऑन थे और बार-बार इस फ़िराक़ में थे कि अब कोई पत्थर आए और अब हमला हो।

लेकिन ये क्या! ये क्या हुआ! सब लोग हैरत से एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे! सबके हैरतज़दा चेहरों पर बस एक ही सवाल था कि यह क्या हुआ और कैसे हुआ! सब लोगों ने आगे बढ़कर अपने-अपने हथियार चौक पर लाकर रख दिये और हाथों में सफ़ेद झण्डे उठा लिये। आज तो ख़ून की होली खेले जाने का मंज़र देखा जाना था लेकिन ये अम्न और महब्बत की सीधी गंगा कैसे बहने लगी। अभी लोग इस अनहोनी से होनी के होने पर हैरत-ज़दा ही थे एक और बात ने उन्हें चौंका कर रख दिया। देखा यह गया कि शिवपुरी की तरफ़ से आए जिन लोगों ने चौक पर आकर हथियार फैंके थे उनको ज़ियाउल-हक़ नाम का एक नौजवान लीड कर रहा था और करीम नगर की तरफ़ से आने वाली भीड़ का नेतृत्व सत्य-प्रकाश नाम का युवक कर रहा

था। जी हाँ सत्य-प्रकाश और ज़ियाउल-हक़! ये दोनों आपस में बड़े ही गहरे दोस्त हैं, एक ही क्लास में पढ़ते हैं, समाज में हज़ार नफ़रतों के बावजूद एक ही साथ खेलते हैं और अपने शहर में अम्न क़ायम करने के लिये ये बड़ी कोशिशें करते रहते हैं। इनकी दोस्ती पूरे शहर भर के लिये मिसाल है, जो दिखाती है कि प्यार और आपसी समझ हर दीवार को गिरा सकती है और हर दूरी को मिटा सकती है। इनकी दोस्ती यह साबित करती है कि मज़हबी नफ़रत के बजाय इंसानियत और एक-दूसरे के प्रति सच्चे प्यार से ही हम समाज में सच्ची शान्ति और भाईचारा ला सकते हैं।

लोगों ने उन दोनों से इस चमत्कार के पीछे की कहानी को जानना चाहा। मीडिया वालों के कैमरा भी उनकी तरफ़ मुड़ गए और सवाल पूछने लगे कि आख़िर इस चमत्कार के पीछे राज़ क्या है? तो सबसे पहले ज़ियाउल-हक़ ने आगे आकर बताया: "हम दोनों ने आज सुबह ही ये तय कर लिया था कि इस बात की पूरी कोशिश की जाएगी कि शहर में दंगा न हो। इसलिये जैसे ही दोनों तरफ़ जुलूस निकालने की शुरुआत हुई तो हम दोनों एक-दूसरे के मोहल्ले को रवाना हो गए। मैं जब शिवपुरी पहुँचा तो मुझे कुछ लोगों ने घेर लिया और मुझे धक्का देकर कहने लगे :

"तेरी हिम्मत कैसे हुई इधर आने की, अब तू यहाँ से ज़िन्दा बचकर नहीं जा सकता।"

एक दूसरे लड़के ने ज़ोरदार थप्पड़ मारकर कहा : "चल जय श्री राम बोल।"

एक और ने मेरे बाल पकड़े और पेट में ज़ोरदार घूँसा मारकर बोला : चल बोल जय श्री राम। उसके बाद वो सब मुझपर एक साथ पिल पड़े। सब एक ही माँग कर रहे थे कि जय श्री राम बोल। मैंने एक ज़ोरदार आवाज़ में 'जय श्री राम बोला।' और यह नारा मैंने 3-4 बार दोहरा दिया।

चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया। मैंने कहा : आपने मुझे 'जय श्री राम' बोलने को कहा मैंने बोल दिया। लेकिन अब मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि आप मुझसे जिस राम की

जयकार बुलवाना चाहते हो, क्या आप लोग भी उन्हें जानते हो, उनकी शिक्षाओं के बारे में कुछ जानते हो। क्या आप उसी राम की जयकार कराना चाहते हो जिसकी प्रशंसा अल्लामा इक़बाल ने यह कहकर की थी कि:

है राम के वजूद पे हिन्दोस्ताँ को नाज़।
अहले-नज़र समझते हैं इसको इमामे-हिन्द।।

क्या आप मुझ से उसी राम की जय का नारा लगवाना चाहते हो जो एक आदर्श पुरुष हैं, जो शान्ति के दूत हैं और दुष्टों के विनाशक हैं? अब आप मुझे बताइये कि क्या श्री राम ने भी किसी से ज़बरदस्ती अपनी जय का नारा लगवाया था। क्या श्री राम के राज्य में क़ानून का राज न होकर अराजकता फैली हुई थी कि जो जिसको चाहे सज़ा सुना दे।”

मैंने कहा : भाइयो! अगर वास्तव में आप श्री राम के भक्त हैं तो आओ मेरे साथ एकता चौक चलते हैं और इस बात का वादा करते हैं कि हम श्री राम के आदर्शों पर चलेंगे, समाज में अम्न और भाईचारा क़ायम करेंगे। और लोग इसके लिये ख़ुशी के साथ तैयार हो गए।

उसके बाद सत्य-प्रकाश आगे आया और उसने बताया :

जब मैं करीम नगर पहुँचा तो मुझे भी कुछ लोगों ने घेर लिया और ख़ूब मारा और मुझ से नाराए-तकबीर कहकर अल्लाहु-अकबर बोलने की धमकी दी। मैंने भी एक ज़ोरदार अन्दाज़ में अल्लाहु-अकबर का नारा लगा दिया। और इस नारे को मैंने कई बार दोहराया।

इस पर उनमें ख़ामोशी छा गई। मैंने उसी सन्नाटे के बीच उनसे सवाल किया कि आप जो नारा मुझसे बुलवाना चाहते हैं क्या आप ख़ुद भी उसका मतलब समझते हैं। अल्लाहु-अकबर का मतलब है "बड़ा सिर्फ़ अल्लाह है" आप बड़े नहीं हो, बड़ाई

सिर्फ़ अल्लाह की है। क्या आप ये नारा लगाकर ख़ुद बड़ाई का दावा कर रहे हैं? ज़रा बताइये जिस नबी की आप मीलाद मना रहे हैं क्या उन्होंने कभी किसी को ज़बरदस्ती पकड़कर नाराए-तकबीर लगवाया था?

क्या आपको मालूम है कि जिस पाक नबी की आप मीलाद मनाने जा रहे हो उन्होंने तो अपने जानी दुश्मनों तक को माफ़ कर दिया। जिस नबी की आप लोग मीलाद मनाते हैं उनका अक़ीदा तो ये था कि सारी मख़लूक़ अल्लाह का कुंबा है। तो ज़रा सोचो कि अपने ही कुंबे के लोगों के साथ कब तक दुश्मनी रखोगे? आख़िर वह वक़्त कब आएगा कि हम सब अपने-आपको एक परिवार का सदस्य मानकर एक-दूसरे को गले लगाएँ?"

मैंने कहा :

दोस्तो! यदि आप वास्तव में नबी की मीलाद मनाना चाहते हैं तो आज सच्ची मीलाद ये होगी कि जिनको आपने अपना दुश्मन समझा हुआ है उनसे गले मिलो। अगर आप सच्चे दिल से नबी से मुहब्बत करते हैं, तो अपनी नफ़रत को छोड़कर, एक दूसरे के दिलों में प्यार और समझ की रोशनी भरें।...

और इस बात पर सबने ख़ुशी-ख़ुशी गले मिलना क़बूल कर लिया।

थोड़ी ही देर में एकता चौक पर बरसों पुरानी एकता लौट आई, लोग आपस में गले मिलने लगे, चारों तरफ़ ईद का माहौल बन गया, खिड़कियों से लगे डरे-सहमे चेहरों पर अचानक मुस्कान लौट आई और अपने-अपने दरवाज़े खोलकर चौक पर पहुँच गए।

हर दिल में उम्मीद की नई किरण चमक उठी, जैसे सारा शहर एक साथ मिलकर एक परिवार बन गया हो। लोगों ने एक-दूसरे के साथ मिलकर न सिर्फ़ गिले-शिकवे भुलाए, बल्कि एक नई शुरुआत की ओर क़दम बढ़ाने का पक्का इरादा कर लिया। इस महान

काम पर डीएम साहब ने सत्य-प्रकाश और ज़ियाउल-हक़ को इनाम से नवाज़ा और चौक पर एक मशाल जलाई जिसके एक तरफ़ लिखा गया सत्य-प्रकाश और दूसरी तरफ़ लिखा गया ज़ियाउल-हक़। इन दोनों नामों का मतलब होता सच की रौशनी।

सीख : इस कहानी से बच्चों को यह सीख मिलती है कि नफ़रत और भेदभाव समाज को तोड़ते हैं, जबकि एकता और प्रेम समाज को जोड़ते हैं। सच्चे धर्म का पालन हिंसा नहीं, बल्कि शान्ति और भाईचारे को बढ़ावा देना है। हर समस्या का हल बातचीत और समझदारी से निकाला जा सकता है। मित्रता, सहनशीलता और मानवता का सम्मान ही सच्चे इंसान की पहचान है।

4) मज़हब सिखाता है आपस में मेल रखना

रात का अंधेरा छाया हुआ था। तेज़ हवा और बर्फ़ीले तूफ़ान ने रात को और भयानक बना दिया था। लेकिन चाँद की चाँदनी कभी-कभी बादलों को चीरती हुई माहौल को रौशन कर देती थी। देश की सरहद पर तनाव अपने चरम पर था। दुश्मन की गोलीबारी लगातार जारी थी। अर्जुन, अपने साथी सैनिकों के साथ दुश्मन का डटकर मुक़ाबला कर रहा था। "मेरे जवानो! याद रखो, हम भारत के सैनिक हैं, हमारी मिट्टी, हमारा देश... सब एक है! पीछे हटने का कोई मौक़ा नहीं है!"

अर्जुन की आवाज़ में एक जोश था जिससे हौसला पाकर उसके साथी भी पूरे जी-जान से मुक़ाबले पर डटे हुए थे। तभी, एक धमाका होता है, जिससे पूरा इलाक़ा दहल जता है। धुआं और मलबा हर तरफ़ फैल जाता है। अर्जुन और उसके साथी गम्भीर रूप से घायल हो जाते हैं। उसके शरीर से ख़ून बहने लगता है। दर्द असहनीय हो जाता है, लेकिन उसका हौसला बाक़ी रहता है। फिर से अपने साथियों को हौसला देते हुए कहता है, "अजय, कबीर, परविन्दर घबराओ मत। हम जल्द ही इस मुसीबत से बाहर निकल जाएँगे। हम एक-दूसरे के लिये हमेशा खड़े रहे हैं और आज भी खड़े रहेंगे। हमारी एकता और हिम्मत हमारी सबसे बड़ी ताक़त है, और इस ताकत से हम किसी भी मुश्किल को पार कर सकते हैं। हम जिस राह पर चल रहे हैं, उस पर कोई भी मुश्किल हमें रोक नहीं सकती!"

इसी ज़ख़्मी हालत में वह अपनी राइफ़ल से निशाना साधने की कोशिश करता है

और ट्रिगर दबा देता है। गोली दुश्मन सिपाही के सीने को चीरती हुई पार निकल जाती है। अपनी पोज़िशन बदल कर घिसटते हुए दूसरी जगह जाता है और फिर से निशाना साधकर एक दूसरे दुश्मन सिपाही को ढेर कर देता है। लेकिन ख़ून ज़्यादा बह जाने के कारण अर्जुन बेहोश हो जाता है और इसी हालत में सुबह तक पड़ा रहता है। उसके साथी भी सब एक-एक करके बेहोश हो चुके होते हैं।

सुबह को उसके कुछ दूसरे साथी सभी ज़ख़्मियों को पास ही के एक शहर के अस्पताल में भर्ती कराने के लिये ले जाते हैं।

जिस अस्पताल में उनको भर्ती कराया गया था उसमें सीनियर डॉ ने जब ज़ख़्मियों को देखा तो फ़ौरन सभी डॉकटर्स को अलर्ट कर दिया और तुरन्त इलाज शुरू कर दिया गया। सीनियर डॉक्टर कोई और नहीं अर्जुन के बचपन का दोस्त जॉन मसीह था। उसने अर्जुन को देखते ही पहचान लिया और अपनी निगरानी में पूरा इलाज पूरी तवज्जोह से कराया।

दूसरे दिन जब अर्जुन को होश आया और हालत कुछ बेहतर हुई तो जॉन उसके पास गया। अर्जुन भी जॉन को देखते ही पहचान गया और दोनों एक दूसरे के गले मिलकर बहुत ख़ुश हुए। दोनों आपस में बातें करने लगे।

जॉन ने कहा, "अर्जुन तुम्हें याद है कि बचपन में तुम्हारे पिता जी जब तुम्हें NCC की ट्रेनिंग के लिये ले जाते थे तो रास्ते में एक मन्दिर पड़ता था और तुम वहाँ पूजा के लिये रुकते थे। मैं वहाँ अपने पिताजी के साथ मन्दिर की धर्मार्थ डिपेंसरी में ज़ख़्मियों की मरहम-पट्टी किया करता था। मेरी तुम से पहली मुलाक़ात वहीँ हुई थी। वहीँ से मैंने एक डॉक्टर बनकर समाज की सेवा करने सपना देखा था और तुम फ़ौजी बनकर देश की सेवा करने का सपना देखा करते थे।"

अभी ये दोनों बात कर ही रहे थे कि दरवाज़े पर दस्तक हुई। जॉन ने दरवाज़े की तरफ़ मुड़कर देखा तो मनप्रीत अपनी पुलिस की वर्दी में खड़ी मुस्कुरा रही थी।

जॉन ने उठकर मनप्रीत का वेलकम किया और बोला, देखो आज मेरे हॉस्पिटल में

कौन भर्ती है?"

मनप्रीत पुलिस में भर्ती होकर अब एसएसपी बनकर आई थी, जब उसने अर्जुन को ग़ौर से देखा तो पहचानते हुए बोली,

"अरे यह तो अर्जुन है, हमारा बचपन का दोस्त।"

जॉन ने कहा, "हाँ यह अर्जुन है, फ़ौज में कमाण्डर है, कल सरहद पर जो गोली बारी हुई थी उसमें यह काफ़ी ज़ख़्मी हो गया था।"

मनप्रीत अर्जुन को देखकर उसे हेलो बोलती है और पूछती है, "और काके! पहचाना मैं कौन हूँ?"

अर्जुन ने तपाक से कहा, "अरे तुम्हें कैसे भूल सकता हूँ मुझे आज भी याद है जब हम लोग गुरुद्वारे में सेवा कर रहे थे तो वहाँ एक पुलिस वाले अंकल आ गए थे और तुम भागकर परदे के पीछे छिप गई थीं, क्योंकि तुम पुलिस से बहुत डरती थीं।”

तीनों ज़ोर से ठहाका लगाकर हँसते हैं।

“हाँ, लेकिन एक घटना ने मनप्रीत के दिल से न केवल पुलिस का डर निकाल दिया था बल्कि उसने पुलिस में भर्ती होने का फ़ैसला भी कर लिया था। वो याद है न कि किस तरह सलमान के झूठे आरोप में गिरफ़्तार होने के बाद मनप्रीत ने पुलिस से डटकर बात कर उसे छुड़ाया था।” जॉन ने कहा।

मनप्रीत ने कहा, "अरे हाँ, ये अपना सलमान कहाँ है आजकल?"

जॉन ने कहा, "वह भी पास ही के शहर में है, एक कॉलेज चलाता है। मैंने फ़ोन कर दिया है वह भी आता ही होगा। इतने में सलमान भी आ जाता है। चारों बैठकर बातें करते हैं।

सलमान ने अपने बारे में बताते हुए कहा, "जब मैं पढ़-लिख गया तो मैंने देखा कि हमारे समाज में शिक्षा को लेकर बहुत पिछड़ापन था। मैंने तय कर लिया कि एक कॉलेज

बनाऊँगा, जिसमें ख़ासकर मुस्लिम समाज के बच्चों को तालीम दी जाएगी और उनके अन्दर समाज-सेवा और इंसानियत की भावना पैदा की जाएगी।"

अगले दिन सुबह-सुबह चारों दोस्त सलमान के कॉलेज पहुँच गए जहाँ बच्चे प्रेयर के लिये क़तार में खड़े हो चुके थे। स्टेज पर सलमान ने अपने दोस्तों का परिचय कराया और बताया कि ये दोस्त किस तरह देश और समाज की सेवा कर रहे हैं।

एक बच्चे ने खड़े होकर सलमान से पूछा, 'सर! आप चारों दोस्त अलग-अलग धर्म से हैं, तो आपका धर्म किस तरह इंसानियत की ख़िदमत और समाज सेवा के लिये

प्रेरित करता है? सबसे पहले जॉन मसीह ने कहा, 'प्यारे बच्चो, पवित्र बाइबिल में लिखा है कि अनाथों और विधवाओं की देखभाल करना ही इन्सान का धर्म है। ईश्वर का आदेश है कि तुममें बड़ा वही है जो दूसरों की सेवा के लिये आगे आता है। मदर टेरेसा ने अपना पूरा जीवन दूसरों की सेवा के लिये समर्पित कर दिया था। मैं उनको अपना आदर्श मानता हूँ। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि सेवा में ही सच्ची

शक्ति है और जो अपने आप को दूसरों के लिए समर्पित करता है, वही सच्चा विजेता होता है।

उसके बाद अर्जुन ने आगे आकर कहा, "बच्चो! मुझे पिता जी ने जो संस्कार दिये हैं उनमें यह है कि 'वसुधैव कुटुंबकम' हमारी संस्कृति है, हमारे देश की महानता यह है कि यहाँ सभी धर्मों के माननेवाले लोग पाए जाते हैं, इसलिये मुझे गर्व है कि मैं उस देश की सरहदों पर खड़ा हूँ जहाँ हर धर्म के लोग पाए जाते हैं। देश की रक्षा और सुरक्षा के लिये वीर अब्दुल-हमीद ने अपनी जान की बाज़ी लगा दी थी। मैं उनको अपना आदर्श मानता हूँ और देश की सेवा के लिये अपने आपको समर्पित कर चुका हूँ।"

उसके बाद मनप्रीत ने आगे आकर बताया, "प्यारे बच्चो और गुरुजनो! गुरुवाणी में सभी मनुष्यों को एक समान माना गया है और सभी के कल्याण की बात की गई है। गुरु नानक देव जी ने निःस्वार्थ सेवा का महत्व बताते हुए कहा है कि सेवा करने से व्यक्ति को संतुष्टि मिलती है। इसलिये मुझे पुलिस में जाकर लोगों की सेवा करने की प्रेरणा मिली और मैं यह काम कर रही हूँ। आपको भी चाहिये कि अपने धर्म से सीख लेते हुए इन्सानियत और समाज सेवा का प्रण लें।"

अन्त में स्कूल के डायरेक्टर सलमान ने आगे आकर कहा, "प्यारे बच्चो, हम चारों दोस्तों में बड़ा प्रेम था, हम सब एक-दूसरे के धर्म का बहुत आदर करते थे और इन्सानियत की ख़िदमत के सपने देखा करते थे। आज हम चारों आपके सामने हैं जो कहीं न कहीं अपने सपनों को साकार करते हुए इन्सानियत की ख़िदमत, देश और समाज सेवा के काम में लगे हुए हैं। मैंने सर सैयद अहमद ख़ाँ और डॉ ज़ाकिर हुसैन के आदर्शों पर चलते हुए इस कॉलेज की स्थापना की है मेरा सपना था कि हमारे समाज का एक-एक बच्चा तालीम हासिल करे, क्योंकि क़ुरआन में कहा गया है कि '

जिस तरह प्रकाश और अन्धकार बराबर नहीं हो सकते, उसी तरह बग़ैर पढ़े-लिखे लोग कभी भी पढ़े-लिखे के बराबर नहीं हो सकते। आप सब बच्चों को भी इसी तरह से एक दूसरे के धर्मों का आदर करते हुए पढ़-लिख कर इन्सानियत की ख़िदमत के लिये आगे आना है।"

सभी बच्चों ने ज़ोरदार तालियाँ बजाईं और इन्हीं तालियों की गड़गड़ाहट के बीच चरों दोस्तों ने हाथ हिलाकर बच्चों से विदा ली। उनकी आँखों में एक नई उम्मीद और आत्मविश्वास था, और दिल में यह विश्वास कि वे जीवन में कुछ बड़ा करेंगे।

सीख : कहानी से बच्चों को सीख मिलती है कि धर्मों का आदर और एक-दूसरे के विश्वासों का सम्मान करना सभी की ज़िम्मेदारी है। इंसानियत और समाज सेवा का जज़्बा हर धर्म में है, और हमें इन्हीं आदर्शों से प्रेरणा लेकर अपने समाज को बेहतर बनाना चाहिये। यह भी समझना चाहिए कि हम सभी अलग-अलग धर्मों, जातियों और पृष्ठभूमियों से आते हैं, फिर भी हमें मिलकर एकता, भाईचारे और समृद्धि की दिशा में काम करना चाहिए। तभी हम अपने समाज को सचमुच एक आदर्श समाज बना सकते हैं।

5) रंगों का जादू

"रेहान बेटा! आज होली का दिन है। देखो, घर से बाहर मत निकलना।" सायमा ने फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर अपने बेटे को समझाते हुए कहा।

"अम्मी, मैं तो बस थोड़ी सी मस्ती करने जा रहा हूँ, क्या हुआ?" रेहान ने एक प्यारी सी मुस्कान के साथ कहा, "पिछले साल तो हम टीटू, शालिनी, सुखविंदर, सिमरन और बहुत सारे दोस्तों के साथ खेलने गए थे, और किसी ने मुझे रंग नहीं लगाया था।" "अम्मी, आपको तो पता है, हम सब एक-दूसरे के रिलिजन की बहुत रेस्पेक्ट करते हैं!" रेहान ने अपनी आँखों में चंचलता के साथ कहा, फिर अपनी माँ के चेहरे पर एक क्यूट सा इशारा किया।

"हाँ बेटा, मुझे मालूम है तुम सब बच्चे बहुत प्यारे हो, पर बुरा हो हमारे समाज के कुछ सरफिरे लोगों का कि वे तरह-तरह की बे-सिर-पैर की बातें फैलाते फिरते हैं। तुम्हें पता नहीं है पिछले साल ही हमारे शहर में होली वाले दिन ही तो शाम के वक़्त दंगा भड़क गया था।"

"अम्मी ये होली के दिन हमारे शहर में दंगा क्यों हो जाता है?" रेहान ने बहुत मासूमियत से अपनी अम्मी से पूछा।

"अरे बेटा क्या बताएँ, हमारे यहाँ कुछ मज़हब के ठेकेदारों ने यह अफ़वाह फैला रखी है कि अगर किसी मुसलमान के जिस्म पर होली का रंग लग जाता है तो जिस्म का वह हिस्सा जहन्नम में जलता है। बस यह बात इतनी बुरी लगती है कि ग़लती से भी अगर होली के दिन किसी को रंग छू जाता है तो वह झगड़े पर आमादा हो जाता है।" अम्मी ने जवाब देते हुए कहा।

"लेकिन अम्मी हम बच्चों ने इस बार बहुत ज़बरदस्त प्लान बनाया है, जिससे उम्मीद है कि हमारे शहर में झगड़ा नहीं होगा और रंगों का यह त्यौहार पूरी शान्ति से मनाया जाएगा।" रेहान ने कहा।

अम्मी ने पूछा, "और वो प्लान क्या है बेटा! ज़रा हमें भी तो बताओ!"

"देखें अम्मी! होली रंगों का त्यौहार है और फूल रंगों का भी प्रतीक होते हैं और शान्ति

का भी, इसलिये हम बहुत-से बच्चों ने तय किया है कि हम सब बच्चे अपने हाथों में अलग-अलग रंगों के फूल लेकर पूरे शहर में रैली निकालेंगे, यानी फूलों के रंग से होली खेलेंगे।" बताओ कैसा आइडिया है?

अम्मी ने कहा, "अरे वाह! यह तो बहुत ही ज़बरदस्त और माइंड-ब्लोइंग आइडिया है, बेटा।"

"सुनो! मैं ऐसा करती हूँ आप लोगों के लिये कुछ प्ला-कार्ड्स तैयार कर देती हूँ, जिन पर कुछ स्लोगन्स लिखे होंगे। आप में से कुछ बच्चे अपने हाथों में वो प्ला-कार्ड लेकर

जब शहर में निकलेंगे तो उससे एक अच्छा मैसेज भी जाएगा।"
"बहुत अच्छा, मेरी प्यारी अम्मी!" यह कहते हुए रेहान अपनी अम्मी से लिपट गया। कुछ ही देर में अम्मी ने कुछ प्ला-कार्ड्स तैयार कर दिये और रेहान अपने दोस्तों को लेकर शहर की गलियों में निकल गया, धीरे-धीरे बच्चे आते गए और थोड़ी ही देर में बच्चों का एक क़ाफ़िला बन गया। यह एक ऐसी रैली थी कि इससे पहले लोगों ने नहीं देखी थी। जिस दिन लोग डरे-सहमे अपने घरों में बैठे हुए थे गलियों से झाँक-झाँक कर इस रैली को देख रहे थे, मानो रैली न हो बल्कि अलग-अलग रंगों के फूल हाथों

में लिये आसमान से नन्हे फ़रिश्ते उतर आए हों। बच्चों के हाथों में रंग-बिरंगे फूल थे और कुछ बच्चों के हाथों में प्ला-कार्ड्स, जिन पर लिखा था :

"बच्चे जन्नत के फूल हैं, फूल रंगों का प्रतीक हैं। होली रंगों का त्यौहार है।"

"रंगों से कैसा बैर है, रंगों में सबकी ख़ैर है।"

"रंग शान्ति का प्रतीक हैं और सब रंग ईश्वर के हैं।"

“भारत के सभी धर्म, भारत के रंग हैं।”

"सब धर्मों का आदर करो, सब रंगों का आदर करो।"

"रंग ही तो हैं जो जीवन को तरंग से भर देते हैं।"

"रंगों से जुड़े हैं हमारे भाव, रंगों से जुड़ जाए हमारा समाज।"

"रंगों को अपनाएँगे, समाज में शान्ति लाएँगे।"

रंगों से भरा बच्चों का यह क़ाफ़िला जब शहर की गलियों से गुज़र रहा था तो लोगों ने पिचकारी के रंगों के बजाय फूलों के रंगों की वर्षा करनी शुरू कर दी। जब यह क़ाफ़िला घंटा घर पहुँचा तो वहाँ पहले ही से रेहान के बहुत-से दोस्त इस क़ाफ़िले के स्वागत के लिये मौजूद थे।

रंगों के इस क़ाफ़िले की ख़बर मीडिया के ज़रिए आनन-फ़ानन शहर के प्रशासन तक भी पहुँच गई। इस ख़बर को सुनकर डीएम अदिति शर्मा साहिबा भी घंटा घर पहुँच गईं और बच्चों की इस कोशिश की सराहना करते हुए कहा

"आज जब मैं आप सभी बच्चों को इस तरह का प्रयास करते देख रही हूँ तो मुझे गर्व हो रहा है कि हमारे शहर में इतने जागरूक बच्चे हैं जो अपनी ज़िम्मेदारियों को बड़ों से ज़्यादा समझ रहे हैं। आप सभी ने आज साबित कर दिया है कि रंगों का त्योहार केवल रंग खेलने का नहीं, बल्कि एकता और भाईचारे का त्योहार है। हम सभी को मिलकर इस शहर को एक ऐसा शहर बनाना है जहाँ हर व्यक्ति समान रूप से

सम्मानित महसूस करे। मैं आप सभी बच्चों से अपील करती हूँ कि आप इस पोज़िटिव बदलाव में अपनी भूमिका निभाएं और अपने दोस्तों और परिवार के लोगों को भी इस दिशा में प्रेरित करें। और मैं शहर के सभी बड़ों से अपील करती हूँ कि हमें इन बच्चों से सीख लेनी चाहिये और अपने शहर में अम्न और शान्ति को बहाल रखने में अपना योगदान देना चाहिये। "

कुछ ही देर में एसएसपी अहमद कमाल साहब भी वहाँ पहुँच चुके थे। उन्होंने भी

बच्चों की इस कोशिश की सराहना की और बोले:

"यदि हम रंगों के महत्व को समझ लेंगे तो वास्तव में अपने समाज को चमन बना देंगे, जहाँ हर कोई दूसरे का आदर और सम्मान करता हुआ दिखाई देगा। हमारे हिन्दू भाई मुसलमानों की भावनाओं को समझते हुए उन पर रंग नहीं फेंकेंगे और हमारे मुसलमान भाई पर अगर किसी ने रंग फेंक दिया तो उसे मुस्कुराते हुए स्वीकार कर लेंगे यह समझते हुए कि रंग ही तो है कोई तीर तो नहीं। आप सभी बच्चों ने आज साबित कर दिया है कि हमें रंगों का त्योहार केवल खेलना नहीं है, बल्कि इस त्यौहार को एकता, भाईचारा और सद्भाव का प्रतीक बना देना है। आप सभी ने अपने इस प्रयास से न केवल शहर का नाम रौशन किया है, बल्कि समाज में एक पोज़िटिव बदलाव की शुरुआत की है।

" वहाँ मौजूद सभी ने तालियाँ बजा कर बच्चों के इस सराहनीय क़दम का स्वागत किया। शहर में चारों तरफ़ हर किसी की ज़बान पर बच्चों की सराहना थी। सभी ने इन बच्चों से सीखा कि हमें एक-दूसरे का सम्मान करते हुए समाज में रहना है।

सीख : इस कहानी से बच्चों को यह सीख मिलती है कि रंगों का त्योहार केवल मस्ती करने के लिये नहीं, बल्कि एकता, भाईचारे और शान्ति का प्रतीक है। विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों का सम्मान करना चाहिये और समाज में प्यार और सौहार्द बनाए रखना चाहिये। बच्चों ने दिखा दिया कि जब वे एकजुट होकर पोज़िटिव क़दम उठाते हैं, तो समाज में बदलाव लाना संभव है।

6) समझदारी की जीत

"तुम हमेशा कमज़ोर ही रहोगे, निकम्मे; कभी कुछ बड़ा नहीं कर पाओगे," राजा ने अपने छोटे बेटे आर्यन को घृणापूर्वक सम्बोधित करते हुए कहा, जिसे वे हमेशा नाकारा और बेकार मानते थे।
उनकी ये बातें आर्यन के दिल में गहरे घाव कर गईं, लेकिन आर्यन ने ख़ुद को कमज़ोर महसूस नहीं किया। उसने अपनी आँखों में एक जलती हुई आग देखी और मन ही मन ठान लिया कि वह एक दिन यह साबित करेगा कि असली ताक़त शारीरिक बल में नहीं, बल्कि एक मज़बूत इच्छाशक्ति और समझदारी में होती है।

"मैं यह साबित करूँगा कि कड़ी मेहनत और सही दिशा से किसी भी मुश्किल को पार किया जा सकता है," उसने खुद से कहा।
"पिताजी, असली ताक़त शारीरिक बल में नहीं, बल्कि समझदारी और बुद्धिमत्ता में ही होती है। मैं यह साबित करूंगा।" आर्यन ने बहुत ही आदरपूर्वक अपने राजा पिता से कहा।
राजकुमार आर्यन ने विज्ञान और तकनीक में गहरी रुचि विकसित की। वह अपने सभी बड़े भाइयों से बिलकुल अलग था, उसके भाई जहाँ एक तरफ़ घूमने-फिरने और ऐश करने के आदी थे, वहीँ आर्यन पढ़ने-लिखने वाला व्यक्तित्व था। उसके बड़े भाई हर समय लड़ने-मारने के लिये तैयार रहते थे, जबकि आर्यन प्रेम से सारे मामले सुलझाने की कोशिश करता था। उसने अपने राज्य में विज्ञान और वैज्ञानिक शोध के ज़रिए कुछ छिपे ख़ज़ाने खोज निकाले थे। लेकिन उसने देखा कि ये ख़ज़ाने तो उस वक़्त तक बेकार हैं जब तक कि हम अपने राज्य के व्यापर को अपने पड़ौसी राज्यों तक न

बढ़ाएँ। तो उसने योजना बनाई। आर्यन ने विचार किया कि अगर पड़ोसी राज्य, जो हमेशा से उनके लिये दुश्मन रहा है, मित्र बन जाए, तो न केवल उनके ख़ज़ाने मूल्यवान बन जाएँगे, बल्कि दोनों राज्यों की अर्थव्यवस्था को भी मज़बूती मिलेगी। आर्यन ने अपनी योजना को लेकर अपने पिता से चर्चा की। राजा ने कहा, "हमने अपने इस पड़ौसी राज्य के साथ हमेशा दुश्मनी रखी है। क्या तुम यह सोचते हो कि वे हमारी बात मानेंगे?"

आर्यन ने कहा, "पिताजी, अगर हम विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में सहयोग करें, तो यह हमारे लिये एक सुनहरा अवसर होगा। हमें अपनी पुरानी दुश्मनी को भुलाकर एक नई शुरुआत करनी चाहिये, क्योंकि हम सब इस धरती पर एक परिवार के सदस्य हैं, और हमें एक दूसरे का साथ देना चाहिये। जब हम मिलकर काम करेंगे, तो न केवल हम अपनी सीमाओं को पार करेंगे, बल्कि दुनिया भर में शान्ति और समृद्धि का सन्देश भी फैलाएंगे। हमें यह समझना होगा कि जब तक हम एक दूसरे के साथ हैं, तब तक कोई भी चुनौती हमें पराजित नहीं कर सकती। हमारा एकजुट होना ही असली शक्ति है। "

उसकी बात सुनकर राजा थोड़े संशय में थे, लेकिन उन्होंने अपने बेटे को प्रयास करने की अनुमति दी। आर्यन ने पड़ोसी राज्य के राजा को एक प्रस्ताव भेजा, जिसमें उसने बताया कि वह उनके राज्य को किस तरह समृद्ध और ख़ुशहाल बना सकता है। लेकिन राजा ने उसे सुनकर तुरन्त अस्वीकार

कर दिया, क्योंकि पुरानी दुश्मनी ने उनके मन में संदेह पैदा कर दिया था।

आर्यन की तरह ही उस राजा की भी एक समझदार बेटी थी, जिसका नाम मीरा था। आर्यन ने मीरा को समझाने के लिये एक पत्र लिखा जिसमें उसने बहुत प्रेमपूर्वक सम्बोधित करते हुए पुरानी दुश्मनी को भुलाकर नए आयाम खोलने का प्रस्ताव दिया था। मीरा ने जैसे ही वह पत्र पढ़ा तो उसने उसके प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए अपने पिता से बात करने का निर्णय लिया। उसने इस स्थिति को बदलने का फ़ैसला किया। वह आर्यन की सोच और दृष्टि से प्रभावित हुई। उसने अपने पिता और भाइयों को समझाया कि यह अवसर उन्हें एक नई दिशा में ले जा सकता है। उसने यह भी कहा, "हम सभी इस पृथ्वी पर एक परिवार की तरह हैं, और जब हम एक दूसरे के साथ सहयोग करते हैं, तो हम केवल अपने राज्य ही नहीं, बल्कि पूरी मानवता का भला कर सकते हैं। हमें अपनी पुरानी दुश्मनी को छोड़ एकजुट हो जाना चाहिये और अपने समाज की तरक़्क़ी के लिये काम करना चाहिये।" आख़िरकार, मीरा की समझदारी और बुद्धिमत्ता ने काम किया। वह अपने पिता को मनाने में सफल रही, और दोनों राज्यों ने समझौता करने का फ़ैसला किया। अब न केवल व्यापार के लिये रास्ता खुल गया, बल्कि तकनीक के क्षेत्र में भी सहयोग शुरू हुआ।

इस समझौते से दोनों राज्यों के बीच न केवल सम्बन्ध मज़बूत हुए, बल्कि यह भी साबित हो गया कि अगर दिल और दिमाग़ से सही दिशा में काम किया जाए तो पुरानी दुश्मनियाँ भी आसानी से भुलाई जा सकती हैं। दोनों राज्यों ने मिलकर एक नई दिशा में क़दम बढ़ाए, जहाँ एकता और सहयोग ही प्रमुख थे।
आर्यन और मीरा की मुलाक़ात हुई, और दोनों के बीच एक गहरी दोस्ती हो गई। धीरे-धीरे, उनकी दोस्ती ने प्यार का रूप ले लिया, और उन्होंने शादी करने का फ़ैसला किया। शादी के बाद, दोनों राज्यों में विकास की लहर दौड़ पड़ी। उन्होंने एक साथ मिलकर नई तकनीकें विकसित कीं, व्यापार को बढ़ावा दिया और अपने ख़ज़ाने का सही उपयोग किया। उनकी साझेदारी ने यह साबित कर दिया कि जब लोग एक दूसरे का हाथ थामकर साथ चलते हैं, तो न केवल व्यक्तिगत जीवन, बल्कि राष्ट्र की समृद्धि भी सुनिश्चित होती है। दोनों राज्यों की अर्थव्यवस्था मज़बूत हुई, और उनकी दोस्ती ने अन्य देशों के लिये एक मिसाल पेश की।

अब सभी ने देखा कि विज्ञान और बुद्धिमत्ता के साथ, पुरानी दुश्मनियों को भुलाकर एक नई दिशा में बढ़ा जा सकता है। दोनों देशों की एकता और समृद्धि ने यह सिद्ध कर दिया कि अगर हम अपनी सोच और दृष्टिकोण को बदलें, तो विश्व में शान्ति और समृद्धि के नए द्वार खोले जा सकते हैं। अब उनके गठबन्धन को देखकर अन्य देशों ने भी आपसी सहयोग के महत्त्व को समझा और एकजुट होने की दिशा में कदम बढ़ाए।

सीख : इस कहानी ने यह सिखाया कि किसी भी देश की असली ताक़त युद्ध में नहीं बल्कि बुद्धिमत्ता, सहयोग और दोस्ती में होती है। जॉनकुमार आर्यन और मीरा ने यह साबित किया कि एकता से सभी बाधाएं पार की जा सकती हैं और तरक़्क़ी की नई राहें खोली जा सकती हैं।

7) चालाक सियार और जंगल का राज

एक समय की बात है, एक सुन्दर जंगल था, जिसका मालिक एक अमीर व्यापारी था। वह अक्सर शहर में रहता था, लेकिन अपने जंगल को सही ढंग से चलाने के लिये उसने कुछ प्रतिनिधि भेजे थे। ये प्रतिनिधि जंगल के जानवरों को नियम-क़ानून बताते और उनकी देखभाल करते थे। सभी जानवर उनके प्रति बहुत सम्मान रखते थे। जंगल में हर जानवर एक-दूसरे का ख़याल रखता और प्रेम और भाईचारे के साथ रहता था। जब कोई भूखा होता, तो दूसरे जानवर उसकी मदद करते, और जब कोई बीमार होता, तो सभी उसकी देखभाल करते।

लेकिन जंगल में एक चालाक सियार था, जिसका नाम चीतू था। चीतू अपनी चालाकियों के लिये मशहूर था और बाक़ी जानवरों में सबसे ज्यादा नापसन्द किया जाता था। एक दिन, भूख के मारे वह शहर की ओर निकल पड़ा। वहाँ उसने एक नील की टंकी देखी और उसके अन्दर क्या है, यह देखने की उत्सुकता (curiosity) के चलते उसमें गिर गया और इस तरह वह पूरा नीला हो गया। बाहर निकल कर जब उसने पानी में अपना प्रतिबिंब देखा, तो उसे लगा कि वह किसी और ही दुनिया का जीव है। उसकी नीली शक्ल ने उसे कुछ और ही सोचने पर मजबूर कर दिया।

उसने सोचा, "अगर मैं इस नीले रंग का इस्तेमाल करके जंगल के मालिक का प्रतिनिधि बनूँ, तो सभी जानवर मेरा आदर करेंगे! "

इस विचार के मन में आते ही वह जल्दी से जंगल लौट आया और अपने नए रूप के साथ सबके सामने खड़ा हुआ।

"देखो, मैं जंगल के मालिक का विशेष प्रतिनिधि हूँ!" चीतू ने गर्व से कहा। जानवर उसके नीले रंग से प्रभावित होकर उसकी बातों पर विश्वास कर गए। वे उसे सम्मान देने लगे, और चीतू ने यह देखकर मन में सोचा कि अब वह जंगल में सर्वश्रेष्ठ यानी सबसे

बेहतर बन गया है। वह कई दिन तक अपने नए रूप का फ़ायदा उठाता रहा और जंगल के जानवरों पर अपना रौब गाँठ कर अपना हुक्म मनवाता रहा। जब चाहा किसी जानवर को पीट देता, जब चाहता किसी का खाना छीन कर खा जाता, किसी भी जानवर को अपमानित कर देता। डर के मारे जानवर उसे चढ़ावे देने लगे। लेकिन कहते हैं न कि झूट के पाँव नहीं होते इसलिये झूट बहुत दिनों तक टिक नहीं पाता। यहाँ भी चीतू की असलियत को छिपाने की ख़ुशी ज़्यादा दिन नहीं टिक सकी।

एक दिन, जब उसने ज़रूरत से ज़्यादा झूठ बोलने की कोशिश की, तब बूढ़े जानवरों ने उसे पहचान लिया। बूढ़ी गिलहरी, जो हमेशा चीतू की चालाकियों पर नज़र रखती थी, ने कहा, "यह कोई असली प्रतिनिधि नहीं है, बल्कि एक धोखेबाज़

सियार है!"

सभी जानवर चौंक गए और चीतू का भेद खुल गया। जानवरों ने एक साथ 'हूँआ-हूँआ' करना शुरू कर दिया। चीतू घबरा गया और उसकी सारी चालाकी बेकार गई। जंगल का असली प्रतिनिधि, जो कुछ समय बाद वापस आया, ने चीतू को सज़ा दी और उसे

जंगल से निकाल दिया। जंगल के असल प्रतिनिधि ने सभी जानवरों की ओर देखते हुए कहा,

"याद रखो, हम सब यहाँ एक परिवार हैं। अगर हम यह चाहते हैं कि हमें समाज में सम्मान और प्रेम मिले, तो हमें अपनी असलियत को छिपाने और दूसरों को धोखा देने की बजाय एक-दूसरे के साथ ईमानदारी और सच्चाई से रहना होगा। याद रखो, कोई भी झूठ और धोखा देर तक नहीं चलता। इसलिये हमें अपने भाईचारे और प्रेम को कभी नहीं खोना चाहिये। हमें एक दूसरे के साथ सच्चे दिल से रहकर इस समाज को और मज़बूत बनाना है।"

सीख : चीतू की कहानी यह सिखाती है कि चालाकी और धोखे से कभी भी सच्चा सम्मान नहीं मिलता। अपनी असलियत को छुपाना और दूसरों को धोखा देना हमेशा बुरा होता है। ईमानदारी और सच्चाई से जीना ही सबसे अच्छा रास्ता है।

8) झन्डा ऊँचा रहे हमारा

"पिताजी, ये झण्डा तो बहुत ऊँचा है। लेकिन इससे क्या होगा?" दिनेश ने झंडा बाँधते हुए पूछा,

हरि प्रसाद ने गर्व से कहा, "बेटा, यह झण्डा हमारी देशभक्ति का प्रतीक है। इसे देखकर सबको पता चलेगा कि हम सच्चे देशभक्त हैं।"

दिनेश ख़ामोश हो गया। वह जानता था कि उसके पिताजी झंडा लगाने में जितनी मेहनत करते हैं, उतनी ही मेहनत अगर समाज की समस्याओं पर करते, तो शायद इससे गाँव की हालत कुछ बेहतर हो जाती।

मगर हरि प्रसाद पर तो जैसे देशभक्ति के नाम पर झण्डा फहराने का जुनून सवार था। इसी कारण गाँव के हर कोने में हरि प्रसाद का नाम चर्चा में रहता था। क्योंकि हर साल स्वतन्त्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस पर वे अपने घर की छत पर सबसे ऊँचा झण्डा लगाते। लोग उनका मज़ाक़ उड़ाते हुए उन्हें "झण्डा जी" कहकर पुकारते थे, मगर उन्हें इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था, बल्कि उन्हें इस पर इतना गर्व था कि हर साल अपने झण्डे की ऊँचाई और चमक को बढ़ाने की कोशिश करते रहते थे।

इस बार भी हरि प्रसाद ने ख़ास तैयारियां की थीं। उन्होंने शहर से सबसे महंगा और टिकाऊ झंडा सिलवाया और उसे अपने घर की छत पर लगवा रहे थे। इसी बीच हरि प्रसाद का पुराना दोस्त रमेश वहां आ गया। रमेश थोड़ा मज़ाक़िया स्वभाव का था, लेकिन उसमें गहरी समझ भी थी। उसने आते ही कहा,

"अरे झण्डा जी, सुना है इस बार आपका झण्डा इतना ऊँचा होने जारा है कि चिड़िया रास्ता भूल जाएंगी और हवाई जहाज़ भी बचकर निकला करेंगे?"

हरि मुस्कुराते हुए बोले, "अरे, इस बार तो पूरा गाँव मेरा झंडा देखकर दंग रह जाएगा। इस बार इतने मज़बूत कपड़े से झण्डा सिलवाया है कि पूरे साल फटनेवाला नहीं है।"

रमेश ने गंभीर होकर कहा, "हरि, यार एक बात बताओ। तुम्हारे ऊँचे-ऊँचे झण्डे फहराने से गाँव का क्या फ़ायदा होता है?"

हरि थोड़ा असहज हुआ और थोड़ा गुस्से में आकर बोला,

"तो क्या मेरे ही देश में तुम मुझे देशभक्ति से रोक रहे हो?"

रमेश ने थोड़ा और गंभीरता से कहना शुरू किया,

"नहीं हरि भाई मेरा वह मतलब बिलकुल नहीं है, मैं आपकी देशभक्ति को सलूट

करता हूँ, लेकिन ज़रा सोचिये तो सही कि तुम्हारे झण्डे की ऊँचाई से क्या गाँव की समस्याएँ ख़त्म हो सकती हैं?

ज़रा बताओ कि तुम्हारे पड़ौस में जो रामू काका रहते हैं, क्या उनके बेटे का स्कूल जाना संभव होगा? तुम्हारे ऊँचे और मज़बूत झण्डे से गाँव की शिक्षा की समस्या हल हो पाएगी? क्या तुम्हारे झंडे की मज़बूती से सड़क के गड्ढे भर जाएंगे? नौजवानों को

रोज़गार मिल पाएगा?" क्या तुम्हारे झण्डे की ऊँचाई से गाँव के हर घर में रौशनी आएगी, और क्या उसकी छांव में किसानों की उपज सुधरेगी?

क्या तुम्हारे झण्डे की ऊँचाई से गाँव में एकता और भाईचारे का माहौल बनेगा, जहाँ हर व्यक्ति को समान अधिकार और अवसर मिलें?

हरि थोड़ा झेंप गया और बोला,

"अरे, तुम तो बस मज़ाक़ कर रहे हो। ये सब झंडा फहराने से जुड़े नहीं हैं। देशप्रेम दिल में होता है।"

रमेश ने इस बार थोड़ा सख़्त लहजे में कहा,
"झंडा जी, असली देशप्रेम दिखावे में नहीं, कर्मों में होता है। अगर तुम सच में देशभक्त हो, तो यह देखो कि तुम्हारे आसपास के लोग किन समस्याओं से जूझ रहे हैं। तुम्हारे अपने बच्चे दिनेश को पढ़ाई में दिलचस्पी नहीं है, तुम्हारी बेटियां पढ़ाई छोड़ चुकी हैं, और पड़ोस के रामू काका का बेटा स्कूल के लिये फ़ीस नहीं जुटा पा रहा। गाँव में जगह-जगह गन्दगी है, सड़कों पर गड्ढे हैं, और आप इन सब समस्याओं पर सहजता के साथ रह रहे हैं। क्या यह देशभक्ति है? देशभक्ति का असली मतलब है, अपने देश और समाज को बेहतर बनाने की दिशा में क़दम उठाना, न कि केवल ऊँचे झंडे से आत्मसंतुष्टि पा लेना।"
हरि को यह सुनकर अजीब सा लगा। उसने झण्डे की तरफ़ देखा और सोचा कि क्या सच में उसने अपनी जिम्मेदारियों को भुला दिया है?
"शायद हाँ!"
रमेश ने फिर कहा,
"झण्डा जी, देश का झण्डा ऊंचा तब होता है, जब हर घर में शिक्षा का दीप जलता है, जब हर बच्चा स्वस्थ और परिवार ख़ुशहाल होता है। हर नौजवान को काम और हर बुज़ुर्ग को सम्मान मिलता है। केवल दिखावे की देशभक्ति से देश कभी तरक़्क़ी नहीं कर सकता है, बल्कि नागरिकों की सेवा की भावना से ही देश तरक़्क़ी करता है। जब हम एक-दूसरे की मदद करने और एकजुट होकर काम करने की भावना को बढ़ावा देंगे, तभी असली देशप्रेम और प्रगति का अनुभव होगा।"
इस बार हरि की आँखों में सच्चाई के आँसू थे। उसने तुरन्त फ़ैसला किया कि वह अपनी बेटियों को फिर से पढ़ाई शुरू करने देगा। अगले दिन उसने अपनी दोनों बेटियों का स्कूल में एडमिशन कराया और दिनेश की शिक्षा पर पूरा ध्यान देना शुरू

कर दिया ताकि उसका समय इधर-उधर बर्बाद न हो। साथ ही, उसने रामू काका के बेटे की पढ़ाई का खर्च उठाने का ज़िम्मा लिया।

गाँव वालों ने जब यह सब देखा, तो हरि के प्रति उनका नज़रिया भी बदल गया। अब वे हरि को मज़ाक में नहीं सचमुच में ऊँचे झण्डे वाला हरि कहते थे और इसमें उनके प्रति एक आदर और सम्मान की भावना थी। रमेश ने मुस्कुराते हुए कहा,

"देखा, झण्डा जी, अब आपका झण्डा समाज सच में सबसे ऊँचा है। वह मज़बूत इसलिये है कि हर दिल में लहरा रहा है।

"हरि ने सिर उठाकर आसमान की ओर देखा, जहाँ उनका झण्डा लहरा रहा था। लेकिन इस बार वह केवल झण्डे से नहीं, अपने कर्मों से गर्व महसूस कर रहा था। हरि ने गहरी सांस ली और रमेश की बातें सोचते हुए अपने भीतर की झिझक को महसूस किया। उसे समझ में आया कि असली देशभक्ति किसी झण्डे में नहीं, बल्कि

अपने कार्यों और समाज की भलाई में है। उसने ठान लिया कि वह अब केवल बातों से नहीं, बल्कि अपने कर्मों से अपनी ज़िम्मेदारी निभाएगा। हरि ने अपने गाँव की समस्याओं पर ध्यान देने का फ़ैसला किया और ख़ुद से यह वादा किया कि वह न केवल अपने लिये, बल्कि अपने समुदाय को एक परिवार समझते हुए उसके लिये भी कुछ करेगा।

सीख : सच्चा देशप्रेम केवल झंडा फहराने में नहीं, बल्कि लोगों की जिंदगी बेहतर बनाने में है। कर्मों से ऊंचा झंडा ही सच्चा देशप्रेम दिखाता है।

9) सच्चा नागरिक

एक बार की बात है, एक छोटे से देश में एक ज़बरदस्त डिबेट हो रही थी। इस डिबेट का शीर्षक था: "हमारा असली प्रधानमंत्री कौन है?"।

देश के हर कोने से लोग आए थे, और हर कोई इस बात पर चर्चा कर रहा था कि असली प्रधानमंत्री के अन्दर क्या गुण होने चाहिये। लोगों के चेहरे पर उत्साह और मायूसी के मिले जुले आसार थे, हर किसी के मन में अलग-अलग विचार थे। कुछ लोग कहते थे कि असली प्रधानमंत्री ऐसा हो जो देश को आर्थिक शक्ति बना दे, तो कुछ का मानना था कि देश का प्रधानमन्त्री वही होना चाहिये जो समाज में समरसता और भाईचारे को बढ़ावा दे।

कुछ लोग आर्थिक समृद्धि के विचार से प्रभावित थे, जबकि दूसरों को यह बात चुभ रही थी कि ऐसे प्रधानमंत्री का असली काम आम लोगों की परेशानियों को समझना और सुलझाना होना चाहिये। जिज्ञासा और गर्मजोशी के बीच, डिबेट का माहौल और भी ज़्यादा रोचक हो गया। इस काम के लिये शहर के बीच में एक स्टेज लगाया गया था और बारी बारी से लोगों को अपनी बात रखने के लिये बुलाया जा रहा था।

पहला वक्ता, जो कि एक युवा नेता था, ने कहा, "प्रधानमंत्री वह होना चाहिये जो सिर्फ सोने के महल में नहीं रहता, बल्कि आम लोगों के बीच रहकर उनकी समस्याओं को समझता है। अगर हमें विश्व गुरु बनना है, तो हमें अपने नागरिकों की जिम्मेदारियों को भी समझना होगा। एक प्रधानमंत्री को केवल शासन की बागडोर

नहीं संभालनी होती, बल्कि उसे समाज के हर वर्ग के दिल में जगह बनानी होती है। उसे अपनी जनता के बीच एक मित्र और मार्गदर्शक बनकर काम करना चाहिये, ताकि हर नागरिक का विश्वास उसे मिले। जब प्रधानमंत्री अपनी जनता की समस्याओं का समाधान करने के लिये कड़ी मेहनत करता है, तभी सच्चे अर्थों में वह देश की प्रगति का नेतृत्व करता है।"

दूसरे वक्ता ने कहा, "असली प्रधानमंत्री वह है जो देश के बच्चों को अच्छी शिक्षा और सुरक्षा देता है। अगर हमारे नागरिक शिक्षित नहीं हैं, तो देश कैसे आगे बढ़ेगा?"

एक युवा महिला ने कहा, "असल प्रधानमंत्री वही हो सकता है जो यह समझे कि देश केवल भूगोल का एक टुकड़ा नहीं है, बल्कि यह एक बड़ा परिवार है, जहाँ हर नागरिक की सुरक्षा और सम्मान सबसे ऊपर हो। जब प्रधानमंत्री अपने देशवासियों को परिवार के सदस्य मानकर उनके हित में काम करता है, तभी वह सच्चे अर्थों में उन्हें एकजुट और ताक़तवर बना सकता है। एक परिवार की तरह, हर व्यक्ति की

सफलता और ख़ुशहाली से ही देश की सच्ची प्रगति सुनिश्चित होती है।"

तभी एक बुजुर्ग ने उठकर कहा, "बच्चो! जहाँ हम अपने प्रधानमन्त्री के बारे में बातें कर रहे हैं, वहीँ हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि एक नागरिक के रूप में हम सबकी ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं। अगर हम केवल अधिकारों की बात करेंगे और ज़िम्मेदारियों को भूल जाएँगे, तो समाज में असमानता बढ़ेगी।"

डिबेट के दौरान, जब हर कोई अपनी बात रख रहा था, एक वृद्ध व्यक्ति उठकर बोले, "प्रधानमंत्री वह होना चाहिये जो देश के नागरिकों की तकलीफ़ों को समझे, न कि केवल आंकड़ों और फ़ॉर्मूलों से काम चलाए। उन्हें अपनी जनता की आँखों में झाँक कर देखना चाहिये और जानना चाहिये कि उनके जीवन में असल बदलाव की ज़रूरत कहाँ है।"

उनकी बात सुनकर एक युवा ने हंसी रोकते कहा,

"तो क्या आप यह कह रहे हैं कि प्रधानमंत्री को जनता के बीच में जाकर खेतों में हल चलाना चाहिये?"

वृद्ध व्यक्ति मुस्कुराते हुए बोले,

"नहीं, पर उन्हें यह समझना चाहिये कि खेतों में जो हल चलाते हैं, वे भी इस देश के प्रधानमंत्री से उतनी ही उम्मीद रखते हैं, जितनी उम्मीद व्यापारी या शहरी लोग रखते हैं।"

तभी युवा नेता ने कहा, "देखिये, हमें यह समझना होगा कि केवल एक व्यक्ति प्रधानमंत्री नहीं होता, बल्कि हर नागरिक की ज़िम्मेदारी होती है कि वह अपने देश के विकास में अपना योगदान दे। अगर हम अपनी ज़िम्मेदारियों को समझेंगे, तभी देश को सही दिशा में ले जा सकेंगे।"

डिबेट के अंत में, लोगों ने एकमत होकर फ़ैसला किया कि असली प्रधानमंत्री वह है

जो अपने नागरिकों को उनकी ज़िम्मेदारियों के प्रति जागरूक करे, शिक्षा, सुरक्षा और एकता को बढ़ावा दे। देश के नागरिकों के साथ एक परिवार के सदस्य का सा व्यवहार करे।

सीख : इस तरह, लोगों ने यह समझा कि असली नेता वही है जो समाज की भलाई के लिये काम करे, और जब सभी नागरिक एकजुट होकर अपनी जिम्मेदारियों को निभाएंगे, तभी उनका देश एक दिन विश्व गुरु बन सकेगा।

इस डिबेट ने सबको सिखाया कि असली प्रधानमंत्री केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि हर एक नागरिक की सोच और कार्यों का परिणाम होता है!

10) चुनावी चर्चा

एक बार की बात है, एक छोटे से देश में चुनावी हवा कुछ अलग ही थी। जैसे ही दिन ढलने को था, चौराहे पर हर ओर हलचल थी। रंग-बिरंगे पोस्टर हवा में उड़ रहे थे, और गगनचुम्बी होर्डिंग्स इस बात का ऐलान कर रहे थे कि इस बार चुनाव एक ऐतिहासिक मोड़ पर आकर खड़ा है। देश के हर कोने से लोग राजधानी की ओर बढ़ रहे थे, ताकि वे अपने उम्मीदवारों की उम्मीदों, वादों और जोश से भरी बातों को सुन सकें। चौराहे पर बड़ा सा मंच सज चुका था, जहाँ सभी प्रमुख नेता और उम्मीदवार अपनी-अपनी दावेदारी पेश करने वाले थे।

मंच के चारों ओर उत्साहित भीड़ जमा हो रही थी, और हर चेहरे पर एक अलग ही गर्मी थी, मानो इस बार का चुनाव न केवल सत्ता, बल्कि देश के भविष्य का फ़ैसला करने वाला हो। जैसे ही वक़्त करीब आया, देश की राजनीति में भूचाल मचाने के लिये उत्सुक उम्मीदवारों ने अपनी-अपनी बारी का इन्तिज़ार करना शुरू कर दिया।
पहला उम्मीदवार, एक चुलबुला सा नेता, मंच पर आया और बोला,
" मैं आपके लिये ऐसा प्रधानमंत्री बनूँगा, जो देश को सोने की चिड़िया बना देगा और

वो चिड़िया हर सुबह आपके सपनों को सच करने का गीत गाया करेगी!"
सभी लोग ताली बजाने लगे, लेकिन तभी एक शरारती बच्चा बोला, "लेकिन सर, चिड़िया तो उड़ जाती है, या उसे नेता लोग उड़ा कर ले जाते हैं। हमें तो उसके अण्डे चाहियें, सोने के अण्डे! जिनसे हम घर बैठे फ़ायदा उठाएँ।"
लोग ठहाका मारकर हँस पड़े।
उम्मीदवार मुस्कुराते हुए बोला, "अरे बच्चे, किसी भी देश के अच्छे नागरिक सोने के

अण्डों का इन्तिज़ार नहीं करते बल्कि अपनी मेहनत और अक़्ल का इस्तेमाल करके देश को आगे बढ़ाते हैं, फिर देश की धरती सोना उगलने लगती है और देश में जगह-जगह सोने के अण्डे दिखाई पड़ने लगते हैं। मैं देश के हर नागरिक को इतना मेहनती बनाऊँगा और उन्हें विकास के वे अवसर दूँगा कि हमारे देश की सोने रूपी चिड़िया जगह-जगह सोने के अण्डे देती नज़र आएगी। मैं आपको चिड़िया भी दूँगा और उसके अण्डे भी, जिनसे आप और चिड़ियाँ भी निकाल सकोगे।"

सब लोग हँस रहे थे और इन मज़ेदार बातों पर तालियाँ भी बजा रहे थे।

फिर दूसरे उम्मीदवार ने अपना वक्तव्य शुरू किया। वह गम्भीरता से बोला, "मैं एक ऐसा प्रधानमंत्री बनूँगा जो सबको शिक्षा और सुरक्षा देगा।"

तभी एक और बच्चा चिल्लाया,

"सर, क्या आप हमें होमवर्क से भी बचाएंगे?"

इस बच्चे की मासूमाना बात सुनकर एक बार फिर से लोग ठहाका मारकर हँसने लगे।

इस दूसरे उम्मीदवार ने कहा,

"बिल्कुल, बच्चे मैं आपको होम-वर्क से भी बचाऊँगा, लेकिन इसके लिये आपको पहले स्कूल जाना पड़ेगा!"

उसने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा,

"देश के अच्छे नागरिक वही होते हैं जो अपना काम समय पर कर लेते हैं, आज का काम कल पर नहीं टालते। मैं सभी नागरिकों को ऐसा ज़िम्मेदार बनाऊँगा सब अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी को अच्छी तरह समझें और उन्हें अदा करें। मैं एक ऐसा प्रधानमंत्री बनूँगा, जो न केवल हर बच्चे के हाथ में किताब देगा, बल्कि हर नागरिक को वह ताक़त भी देगा कि वे अपने हक़ और सपनों के लिये खड़े हो सकें। मेरे

नेतृत्व में, यह देश ऐसा क़िला बनेगा, जहाँ हर व्यक्ति सुरक्षित और हर सपना साकार होगा।"

लोगों ने एक बार फिर से ज़ोरदार तालियाँ बजाईं। चर्चा के दौरान एक बुज़ुर्ग ने मंच पर आकर कहा, "भाइयो और बहनो, हमें यह सोचने की ज़रूरत है कि हमारे देश के लिये अच्छा प्रधानमंत्री कौन हो सकता है? इसके लिये हमारा सबसे पहला कर्तव्य यह है कि चुनाव के दिन हम सब अपने घरों से निकलें और पोलिंग बूथ पर जाकर

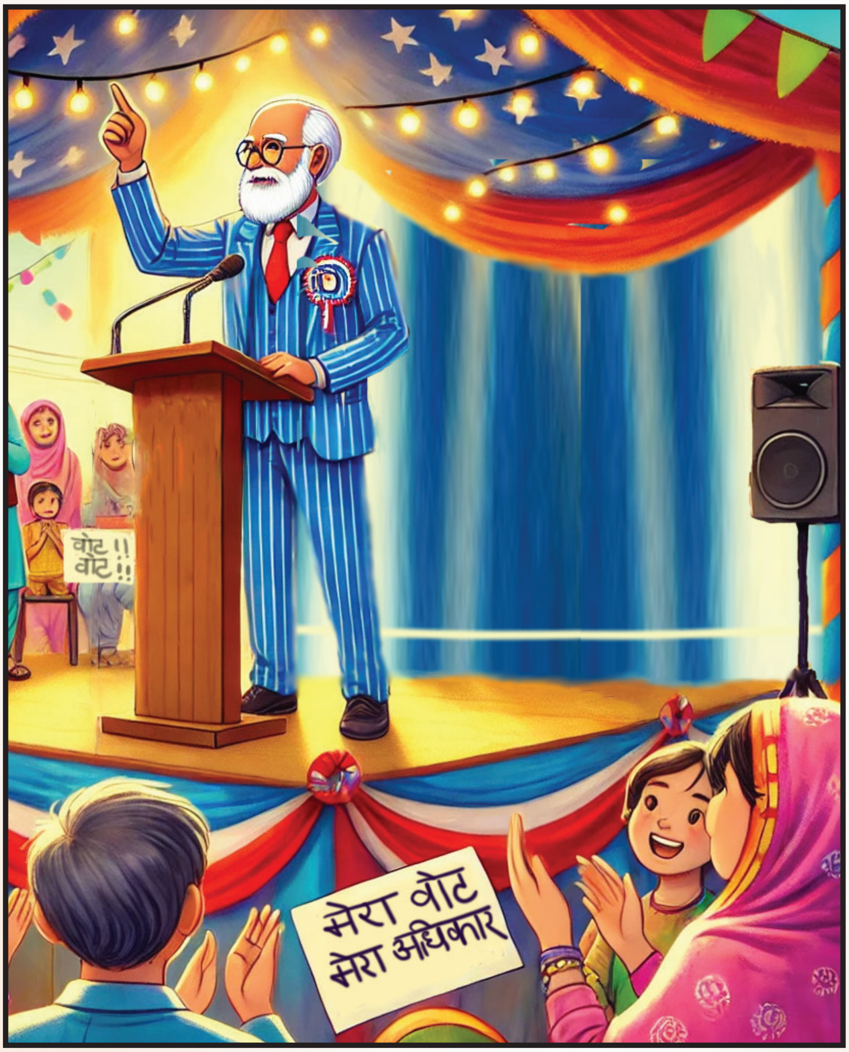

चुनाव में हिस्सा लें और अपना क़ीमती वोट डालें।" सब लोगों ने बुज़ुर्ग की बातों पर सहमति जताते हुए तालियाँ बजाईं। तभी एक बच्चे ने खड़े होकर कहा,

"ये पोलिंग बूथ क्या कोई खम्भा होता है जिसपर चढ़कर हम अपना वोट डालते हैं?"

बच्चे की बातें सुनकर एक बार फिर सभा में

ज़ोरदार ठहाका लगा। लेकिन बुज़ुर्ग ने बच्चे को समझाते हुए कहा,
"बच्चे, पोलिंग बूथ वह जगह होती है जहाँ देश के ज़िम्मेदार नागरिक एक-एक करके जाते हैं और सीक्रेटली अपना वोट डालते हैं, बाद में फिर उन वोटों को काउंट किया जाता है, जिसके हक़ में ज़्यदा वोट्स होते हैं उसे प्रधानमन्त्री मान लिया जाता है। वह एक तरह से जनता का चुना हुआ प्रतिनिधि होता है।

चुनावी चर्चा को आगे बढ़ाने के लिये एक और उम्मीदवार मंच पर आया, इस बार उम्मीदवार एक महिला थीं, उन्होंने कहा,
"अगर मैं प्रधानमन्त्री बनाई जाती हूँ तो मैं हर नौजवान को रोज़गार दूँगी।"
इस पर एक बच्चा खड़ा हुआ और बोला, "इसका मतलब तो हर नौजवान को रोज़ाना काम पर जाना पड़ेगा, फिर गाँधी मैदान में क्रिकेट खेलने के लिये कोई नहीं जाया करेगा।"

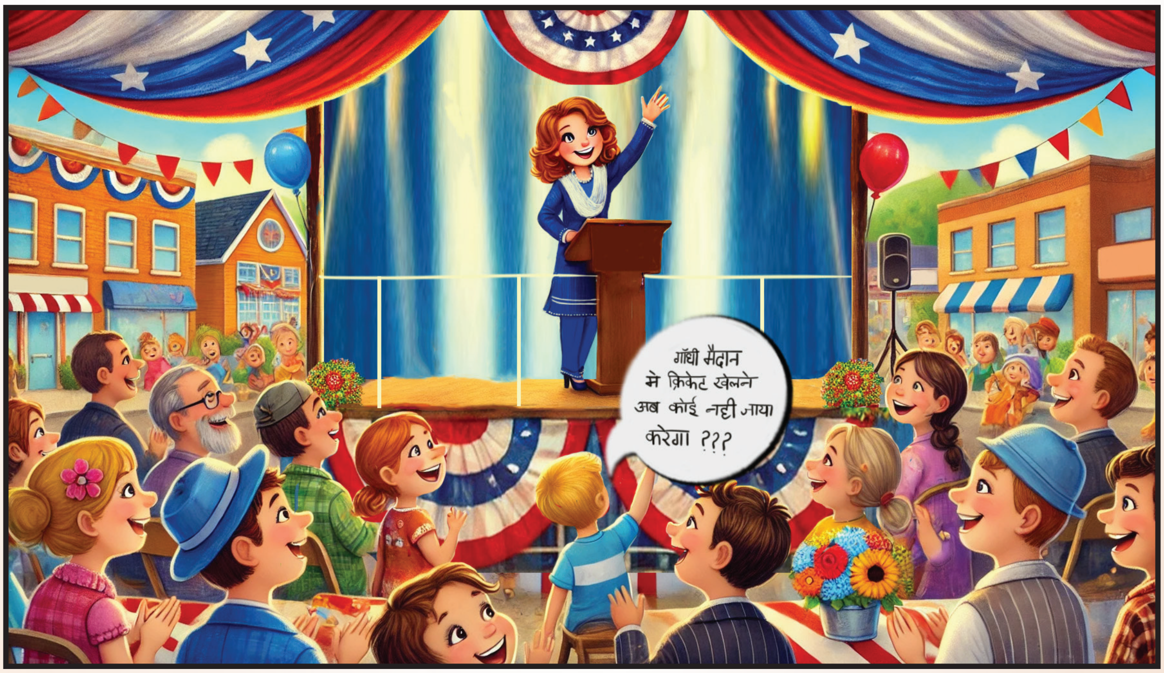

बच्चे की इस बात पर फिर से सब लोग हँसने लगे।

महिला उम्मीदवार ने कहा,

"कोई भी देश उसी समय ख़ुशहाल हो सकता है जबकि उसके युवा काम के वक़्त काम करें और खेल के वक़्त खेलें, चूँकि देश की ख़ुशहाली के लिये युवाओं का खेलना भी ज़रूरी है तो मैं सप्ताह में दो दिन युवाओं को खेलने का अवसर भी दूँगी ताकि हमारा देश खेल के मैदान में भी दुनिया के दूसरे देशों से पीछे न रहे।"

फिर एक युवा नेता ने कहा, "हमें यह समझना होगा कि देश का प्रधानमंत्री वही हो जो हमें एक तरफ़ अपने हक़ लेने का गुर सिखाए तो दूसरी तरफ़ हमें अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास भी कराए। हम पर कड़ी निगरानी भी रखे तो हमारी सुरक्षा और रोज़गार के अवसर भी प्रदान करे। अगर हम सब अपनी-अपनी ज़िम्मेदारियों को समझें और पूरी निष्ठा के साथ उन ज़िम्मेदारियों को अदा करें, तो हमारा देश वास्तव में विश्व गुरु बन सकता है। प्रधानमंत्री ऐसा हो जो हर नागरिक को अपने परिवार का सदस्य माने, जहाँ पूरे देश को एक परिवार की तरह जोड़कर चलाया जाए, क्योंकि सच्ची ताक़त तभी आती है जब हम सब एक हों।"

इस चुनावी चर्चा के अन्त में, सभी ने एकमत होकर फ़ैसला किया कि असली प्रधानमंत्री वही है, जो ख़ुद भी अपने कर्तव्यों के प्रति ज़िम्मेदार हो और देश के नागरिकों को भी ज़िम्मेदार बनाए, जो न केवल बात करे बल्कि देश को विकास की ओर अग्रसर भी करे। न केवल देश को समृद्ध और ख़ुशहाल बनाए बल्कि देश के नागरिकों के बीच सुरक्षा को भी सुनिश्चित करे और देश के नागरिकों के बीच किसी भी प्रकार का भेदभाव न करे, न धर्म और आस्था के आधार पर और न लिंग के आधार पर। जो हर किसान के खेत में हरियाली देखे, हर बच्चे के चेहरे पर मुस्कान लाए,

और हर बुज़ुर्ग के मन में यह विश्वास जगाए कि वह सुरक्षित और सम्मानित है। ऐसा प्रधानमंत्री, जो न केवल वादे करे, बल्कि उन पर खरा उतरे और हर नागरिक को यह महसूस कराए कि यह देश हमारा है, और हम सब इस देश के अभिन्न हिस्से हैं। असली नेता वही है, जो न केवल वर्तमान की समस्याओं को हल करे, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिये एक बेहतर, सुरक्षित और उज्जवल देश की नींव रखे।

सीख : इस चुनावी चर्चा ने सबको सिखाया कि हमारा असली नेता और प्रतिनिधि वही है जो हँसते-मुस्कुराते हुए अपने लोगों को एकजुट कर उन्हें अपने देश का भाग्य बदलने और देश को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिये प्रेरित करे!

ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन: एक नई पहल

'हिंदुस्तान' जन्नत निशान, जो मज़हबी, भाषायी एवं सांस्कृतिक विविधताओं का देश है और 'अनेकता में एकता' से जिसकी पहचान होती है। इस महान देश का इतिहास मानव-प्रेम की मिसालों से भरा पड़ा है। जिसमें शक्ति और शान्ति भक्तों के गीतों का नतीजा है और हिंदुस्तान हमेशा इस बात का गवाह रहा है कि धरती के बासियों की मुक्ती प्रीत में है।

पता नहीं कि दुनिया को किसकी बुरी नज़र लग गई कि सामाजिक निकटता दूरियों में बदलने लगी हैं। सच्चाई तो यही है कि इस देश के अधिकांश लोग आज भी इस अलगाव तथा विभाजन का हिस्सा बनने के लिए तैयार नहीं है, परन्तु बहुसंख्यक अगर ख़ामोश रहती है तो उसका अस्तित्व गहरे अन्धकार के गर्त में समा जाता है। वर्तमान में अधिकांश लोग समाज एवं मानवता के दुखों का निवारण करने के बजाय केवल और केवल अपने आप में व्यस्त हैं। वह मनुष्य जो कभी जनसाधारण की आकांक्षा का स्वर हुआ करता था आज अपने आप तक ही सीमित होकर रह गया है। इन हालात में हाथ पर हाथ धरे बैठा नहीं रहा जा सकता। इसलिए ज़रूरी है कि एक बार उन सभी प्रतीकों को फिर से ज़िन्दा किया जाए जो "मुहब्बतों की गाथा" और "प्रेम के ढाई अक्षर" से एक दूसरे को जोड़े रहे। भारत में एक दूसरे को जोड़ने वालों का यदि उल्लेख किया जाए तो उनके नाम और काम गिनाने में कोई देर न लगेगी लेकिन अगर एक दूसरे को एक दूसरे से अलग करने वालों और बाँटने वालों के नाम पूछे जाएँ तो उसे उनके नाम याद करने और बताने में बड़ी मुश्किल आएगी। इन सबके बावजूद आज फिर लोगों तक पहुँचाया जाना चाहिए।

यही वह सोच और फ़िक्र है जिसके तहत 'ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन' की स्थापना की गई है। हज़रत अमीर ख़ुसरो मध्यकालीन भारत के एक ऐसे लोकप्रिय, मनमोहक एवं सर्वव्यापी व्यक्तित्व हैं, जिन्हें सदियाँ गुज़रने के बाद भी याद रखा गया और हमेशा याद रखा जाएगा। वे सूफ़ी भी थे और सिपाही भी, कवि भी थे और संगीतकार भी, इतिहासकार भी थे और इतिहास बनाने वाले भी। उनके व्यक्तित्व की सार्वभौमिकता और विशिष्टता ने उन्हें न केवल विभिन्न गुणों का वाहक बनाया था बल्कि बहुआयामी विशेषताओं से परिपूर्ण किया था। आज ज़रूरत इस बात की है कि हम भारतवासी, भारत की प्रत्येक परम्परा को, चाहे वह धार्मिक हो अथवा सांस्कृतिक अथवा भाषायी, शैक्षिक हो या साहित्यिक, उसे हज़रत अमीर ख़ुसरो की तरह देखें, अपनाएं और उसके लिए अपने आप को समर्पित कर दें। हज़रत अमीर ख़ुसरो, जिनकी माँ भारतीय थीं और पिता तुर्क, एक ऐसे भारतीय हैं जो न केवल भारत की महानता के तराने गाते हैं बल्कि अपने आपको इस मिट्टी का इस प्रकार अभिन्न अंग बनाना चाहते हैं जैसे यह मिट्टी ही सब कुछ हो। देश की मिट्टी से इस लगाव और प्रेम को अल्ताफ़ हुसैन हाली ने इस तरह बयान किया हैः

तेरी इक मुश्त-ए-ख़ाक के बदले
लूँ न हरगिज़ अगर बहिश्त मिले

ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन देशप्रेम, मानव प्रेम तथा प्रकृति से निकटता को अपनाने और सभी प्रकार के भेदभाव और नफ़रत से ऊपर उठकर मुहब्बत को आम करना चाहती है।

प्यारे बच्चो

क्या आप जानते हैं कि हम सब एक ही परिवार के सदस्य हैं? चाहे हम हिन्दू हों या मुस्लिम, सिख हों या ईसाई, हम सब एक ही धरती के बच्चे हैं। इस किताब में, आप ऐसी ही कई कहानियों से मिलेंगे, जहाँ प्यार, दोस्ती, और समझदारी की जीत होती है।

इस किताब का उद्देश्य है कि हम सब यह समझें कि विविधता हमारी ताक़त है, कमज़ोरी नहीं। हमारी अलग-अलग भाषाएँ, संस्कृतियाँ, और परम्पराएँ हमें और भी अनोखा बनाती हैं। जब हम एक-दूसरे का सम्मान करते हैं और मिलकर काम करते हैं, तभी हम एक ख़ुशहाल और शान्तिपूर्ण समाज बना सकते हैं। इसलिये ज़रूरी है कि एक-दूसरे से सीखें, एक-दूसरे की मदद करें, और साथ मिलकर आगे बढ़ें।

आइए, इन कहानियों के साथ एक ऐसी दुनिया की कल्पना करें जहाँ सभी लोग एक-दूसरे का ख़याल रखते हैं। जहाँ धर्म, जाति, और रंग का भेदभाव नहीं होता।

चलिये, मिलकर एक ऐसा समाज बनाएँ जहाँ हर बच्चा ख़ुश हो, हर दिल ख़ुश हो!

ISBN:978-81-985023-2-2

9 788198 502322

khusro foundation

ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन

D-319, Defence Colony, New Delhi 110024

khusrofoundation.del@gmail.com +91 9318431341

@Khusrofounda @Khusrofoundation @Khusro_foundation @Khusrofoundation